सफलता की कहानी...
समृद्धि की निशानी

संकलन एवं संपादन

डॉ. एस.के. सिंह
डॉ. बी.एल. जाँगिड़
डॉ. पी.पी. रोहिल्ला
डॉ. एम.एस. मीना
डॉ. एच.एन. मीना

भाकृअनुप-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, क्षेत्र-II
(आई.एस.ओ. 9001-2015 प्रमाणित संस्थान)
काजरी परिसर, जोधपुर - 342 005 (राजस्थान)

प्रकाशकः
डॉ. एस.के. सिंह
निदेशक, भाकृअनुप–कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, क्षेत्र–II
जोधपुर 342 005 (राजस्थान)

संकलन एवं संपादनः
डॉ. एस.के. सिंह, निदेशक, भाकृअनुप–अटारी–II, जोधपुर
डॉ. बी.एल. जाँगिड़, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि प्रसार)
डॉ. पी.पी. रोहिल्ला, प्रधान वैज्ञानिक (पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन)
डॉ. एम.एस. मीना, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि प्रसार)
डॉ. एच.एन. मीना, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान)

संपादकीय सहायताः
श्री पी.के. सतपथी
श्री नरपत सिंह गहलोत
श्री भवानीसिंह इन्दा

वर्षः 2019

उद्धरण
सिंह, एस. के., जाँगिड़, बी. एल., रोहिल्ला, पी.पी., मीना, एम. एस. एवं मीना, एच.एन. (2019). सफलता की कहानी–समृद्धि की निशानी, भाकृअनुप–कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र–।।, जोधपुर, प्रसार बुलेटिन–00/2019: 1–000

आभार
सफलता की कहानियों के प्रकाशन के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के माननीय उप महानिदेशक (कृषि प्रसार) डॉ. ए.के.सिंह से मिली प्रेरणा व मार्गदर्शन के लिये यह संस्थान उनका आभारी है।

मुद्रकः
एवरग्रीन प्रिण्टर्स, जोधपुर # 9414128647

भाकृअनुप
ICAR

डॉ. अशोक कुमार सिंह
उप महानिदेशक (कृषि प्रसार)
Dr. Ashok Kumar Singh
DDG (Agricultural Extension)

Indian Council of Agricultural Research
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
Division of Agricultural Extension
कृषि प्रसार संभाग
Krishi Anusandhan Bhawan, New Delhi - 110 012
कृषि अनुसंधान भवन,नई दिल्ली–110 012
Phone: 91-11-2584 3277, Fax : 91-11-25842968 E-mail: aksicar@gmail.com
फोनः 91–11–25843277 फैक्सः 91–11–25842968, ई–मेलः aksicar@gmail.com

प्राक्कथन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (भाकृअनुप), नई दिल्ली के 'कृषि प्रसार संभाग' के अन्तर्गत समस्त भारत में नवीनतम कृषि तकनीकों, जो विभिन्न अनुसंधान संस्थानों व राज्य स्तरीय कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित की गयी है, उनको सबसे महत्वपूर्ण उपभोक्ता यानी कृषक समुदाय तक ले जाने के लिये 'अग्रिमपंक्ति प्रसार पद्धति' की प्रणाली द्वारा पूरे देश में 'कृषि विज्ञान केन्द्रों' का संचालन हो रहा है। वर्तमान में भाकृअनुप के अन्तर्गत विभिन्न अनुसंधान संस्थानों, राज्य स्तरीय कृषि विश्वविद्यालयों, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम, राज्य सरकारों, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, मानित विश्वविद्यालयों, अन्य शैक्षणिक संस्थानों एवं गैर सरकारी संस्थाओं आदि द्वारा देश भर में कुल 706 कृषि विज्ञान केन्द्रों का संचालन हो रहा है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा चुनौतीपूर्ण दायित्व ''कृषकों की आय दो गुनी–2022'' तक करने का निर्वहन किया जा रहा हैं। देश में कुल 14 करोड़ खेतीहर परिवार है, जिसमें से 12.00 करोड़ के लगभग लघु (2.00 हे. तक की भूमि जोत वाले) व सीमान्त (1.00 हे. तक की भूमि जोत वाले) कृषक परिवार है। छियासी (86) प्रतिशत अलाभकर जोत को लाभकर बनाकर कृषक आय दो गुना करने के एक महत्वपूर्ण दायित्व को प्राप्त कराने की दिशा में कृषि विज्ञान केन्द्र कृषक भागीदारी कार्यक्रमों का आयोजन व संचालन कर योगदान कर रहे है। जिससे अधिक से अधिक कृषक समुदाय खेती को लाभप्रद व्यवसाय बनाने में अग्रसर व केन्द्रीय भूमिका का निर्वाहन कर सकें। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा क्षेत्र की परिस्थिति, उपलब्ध संसाधनों व कृषक समुदाय की आवश्यकता के अनुसार तकनीकों का निर्धारण एवं प्रदर्शन कृषकों की सक्रिय भागीदारी से किया जाता है। कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से फसल, सब्जी, फल एवं चारा उत्पादन, पशुपालन, मूल्य संवर्धन, कृषि उद्यमिता, एवं महिला सशक्तीकरण आदि के क्षेत्रों में कृषकों, कृषक महिलाओं, ग्रामीण नवयुवकों का कौशल विकास तथा तकनीकी हस्तांतरण से सक्षम बनाकर उत्पादकता को बढाकर उनकी आमदनी में बढोतरी की जा रही हैं। वर्तमान में कृषि को लाभकारी उद्यम बनाने के लिये कौशल विकास पर अधिक जोर दिया जा रहा है।

राजस्थान, हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केन्द्रों के ऐसे निरंतर प्रयासों से इन राज्यों के अनेक कृषकों, महिलाओं, एवं ग्रामीण नवयुवकों द्वारा कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में नवचारों व तकनीकों को अपनाने से न केवल उनके रोजगार व आय में वृद्धि हुई है बल्कि उनके जीवन में खुशहाली भी आई है। ऐसे लोगों की 'सफलता की कहानी–उनकी समृद्धि की निशानी' बनी है अतः ये कहानियाँ पूरे कृषि समुदाय और कृषि में रूचि रखने वाले समस्त भागीदारों के लिये निश्चित ही प्रेरणादायक होगी। ऐसे प्रगतिशील, उद्यमी, मेहनती, दृढ संकल्पित एवं समर्पित लोगों की सराहना करने, उन्हें और बेहतर करने के लिये प्रोत्साहित करने तथा उनसे अन्य कृषकों को प्रेरणा मिले इस उद्‌देश्य से भाकृअनुप–कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र–II, जोधपुर, ऐसे सफल कृषकों की कहानियाँ 'सफलता की कहानी–समृद्धि की निशानी' पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर रहा है। उक्त लेखन के सामयिक प्रकाशन के लिये भाकृअनुप–कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र–II, जोधपुर, के निदेशक व वैज्ञानिकों की सराहना करता हूँ व शुभकामनाएं देता हूँ।

(ए.के. सिंह)

भाकृअनुप-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान
(काजरी परिसर) जोधपुर - 342 005 (राज.)
ICAR-Agricultural Technology Application Research Institute
(CAZRI Campus) Jodhpur - 342 005 (Raj.)
(ISO 9001:2015)
Phone: +91-291-2740516, 2748412 FAX: +91-291-2744367
E-mail: zpd6jodhpur@gmail.com, Website: www.atarijodhpur.res.in

डॉ. सुशील कुमार सिंह
निदेशक
Dr. Sushil Kumar Singh
Director

आमुख

ग्रामीण भारत में कृषि रोजगार सृजन का सशक्त माध्यम है। लगभग 14 करोड़ किसान परिवार कृषि से जुड़कर आजीविका अर्जित करते है। लेकिन वर्तमान में पारंपरिक तरीकों से कृषि ज्यादा लाभदायक होने की बजाय घाटे का सौदा ज्यादा साबित हो रही है। नवीन कृषि तकनीकों को कृषक समुदाय तक पहुँचाने के लिये भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (भाकृअनुप), नई दिल्ली के अर्न्तगत सम्पूर्ण देश में 'कृषि विज्ञान केन्द्र' कार्य कर रहे है। राजस्थान, हरियाणा व दिल्ली राज्यों में 63 कृषि विज्ञान केन्द्रों का संचालन हो रहा है, जिनका अनुश्रवण एवं समन्वय भाकृअनुप–कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र–II, जोधपुर, द्वारा किया जाता हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र अपनी विभिन्न गतिविधियों यथा– अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, प्रशिक्षण, प्रसार गतिविधियां आदि अनेक गतिविधियां अपने कार्यक्षेत्र की परिस्थिति, उपलब्ध संसाधनों व कृषक समुदाय की आवश्यकता के अनुसार कृषकों की सक्रिय भागीदारी से करते है। जिससे कृषकों तक नवीन कृषि तकनीकों का हस्तांतरण हो और उनकी कृषि उत्पादकता और आमदनी बढे।

कृषि विज्ञान केन्द्रों के निरंतर प्रयासों से राजस्थान, हरियाणा व दिल्ली राज्यों के अनेक कृषकों, महिलाओं, एवं ग्रामीण नवयुवकों ने कृषि एवं उससे सम्बंधित नव तकनीकों को अपनाया है और अपनी आय को बढाकर एक सफलता की मिसाल कायम की है। कृषकों को नवीन तकनीकों को अपनाने के लिये प्रेरित करने के लिये इनके आस–पास के किसानों द्वारा इन तकनीकों एवं नवाचारों को अपनाकर हासिल की गई सफलता की गाथा उनको प्रेरित करने का एक बहुत ही प्रभावी तरीका है क्योंकि सफलता की कहानी उनके आस–पास की होने के कारण उनको लगता है कि मेरे पड़ौस का साथी ऐसा कर रहा है और सफल हो रहा है तो मैं भी कर सकता हूँ और उसे अपने सफल होने का विश्वास भी जल्दी हो जाता है।

ऐसे किसानों के नवाचार व सफलता की कहानी को अन्य दूसरों तक पहुँचाने हेतु भाकृअनुप–कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र–II, जोधपुर, 'सफलता की कहानी–समृद्धि की निशानी' पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर रहा है, जिससे कृषक समुदाय नवीन कृषि तकनीकों को अपनाने व अपनी

खेती से आय बढाने के लिये प्रेरित हो सके। इस क्षेत्र के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषकों के विकास के लिये किये जा रहे निरंतर प्रयासों और योगदान की मैं सराहना करता हूँ और अपने क्षेत्र के सफल किसानों की सफलता की कहानियां सभी के साथ साझा करने के लिये इनका धन्यवाद देता हूँ।

इस पुस्तिका के समय से प्रकाशन के लिये सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा भाकृअनुप–कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र–II, जोधपुर के सभी वैज्ञानिकों व सहयोगियों के योगदान की मैं सराहना करता हूँ।

(सुशील कुमार सिंह)

अनुक्रमणिका

1 कृषि विज्ञान केन्द्र - अजमेर

कृषि में नवाचार अपनाकर बढाई आय

परिचय

श्री रामदेव चौधरी, ग्राम– चुरली, पंचायत समिति– सिलोरा, किशनगढ़, जिला–अजमेर (राजस्थान) के निवासी है। चुरली गांव मार्बल नगरी किशनगढ़ से लगभग 10 कि.मी. दूरी पर है। पूर्वजों से ही श्री रामदेव चौधरी के परिवार के जीवकोपार्जन का मुख्य व्यवसाय खेती ही रहा है। रामदेव चौधरी के पास 8 हैक्टर खेती योग्य जमीन है। पानी की कमी व खेत की मिट्टी की उर्वरता में कमी के चलते ऐसा अनुभव किया गया कि वर्ष 2010 के पश्चात कृषि पैदावार में कमी हो रही है जिसकी वजह से रामदेव चौधरी का कृषि से मोह भंग होने लगा।

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

ऐसे में अक्टूबर 2010 में कृषि विज्ञान केन्द्र, अजमेर द्वारा 30 दिवसीय नर्सरी प्रबन्धन प्रशिक्षण में विभिन्न प्रशिक्षणार्थियों एवं प्रशिक्षकों से संपर्क होने से कृषि की विभिन्न विधाओं के बारे में सविस्तार जानकारी मिली। प्रशिक्षण में पॉली हाउस, शेडनेट हाऊस, वर्षा जल संग्रहण, उन्नत किस्मों के फलदार पौधे, फूलदार पौधे, मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने हेतु वर्मी कम्पोस्ट एवं उन्नत कृषि यंत्रों के बारे में प्रायोगिक व सैद्धान्तिक जानकारी प्राप्त हुई।

श्री रामदेव के अनुसार प्रशिक्षण के तत्पश्चात् ही उद्यान विभाग से अनुदान पर मॉडल नर्सरी स्थापित की जिसमें मातृ फलोधान इकाई के लिये उन्नत किस्मों के पौधे कृषि विज्ञान केन्द्र, अजमेर से प्राप्त किये। कृषि

विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों की प्रेरणा से जल बचत हेतु वर्षा जल संग्रहण हौज का निर्माण किया, जिससे सिंचाई के साथ–साथ मछली पालन भी कर रहे है। केन्द्र के सहयोग से वर्मी कम्पोस्ट इकाई की स्थापना कर फार्म पर पाले पशुओं के गोबर का सदुपयोग कर मिटटी की उर्वरता भी बढ़ा रहे है।

श्री रामदेव द्वारा अपनाये गये नवाचारों का विवरण निम्नानुसार है–

1. मॉडल नर्सरी की स्थापना
2. मातृ फलोधान यूनिट
3. वर्षाजल संग्रहण हौज का निर्माण एवं मछली पालन
4. वर्मी कम्पोस्ट इकाई
5. गुलाब, पपीता का उन्नत किस्मों से उत्पादन
6. 15 बीघा क्षैत्र में रिजके का उत्पादन
7. जल बचत हेतु फव्वारा सेट व बूँद–बूँद सिंचाई संयत्र
8. उन्नत कृषि यंत्र उपयोग जैसे– रोटावेटर, रिजमेकर, पिट डिगर कल्टीवेटर, फर्टी कम सीड ड्रिल, थ्रेसर व ट्रेक्टर
9. 10–15 व्यक्तियों को पूरे वर्ष रोजगार की उपलब्धता सुनिश्चित कराना

उत्पादन व परिणाम

श्री रामदेव चौधरी विभिन्न नवाचारों को अपनाकर न केवल अपनी कृषि उत्पादन एवं संबधित गतिविधियों का विविधिकरण किया बल्कि अपनी भूमि व जल संरक्षण करते हुए बेहतर आय प्राप्त कर रहे है। वर्तमान में इनको विभिन्न उत्पादन प्रक्रमों से हो रही आय–व्यय का विवरण निम्नानुसार है–

उत्पादन प्रक्रम	क्षेत्र (है.)	व्यय (₹)	सकल आय (₹)	शुद्ध आय (₹)
रिजका उत्पादन	2.50	2,88,000	6,72,000	3,84,000
फल उत्पादन	0.25	60,000	1,50,000	90,000
नर्सरी	1.00	1,50,000	2,75,000	1,25,000
मछली पालन	0.12	62,000	98,000	36,000
फसल उत्पादन	4.00	2,50,000	5,40,000	2,90,000
योग	**7.87**	**8,10,000**	**17,35,000**	**9,25,000**

प्रभाव

खेत की उर्वरता बढ़ने से रामदेव चौधरी ने लगभग 15 बीघा क्षेत्र में रिजके का उत्पादन कर नजदीकी गौ–शाला से सम्पर्क कर रिजके से लगभग 2–3 हजार रुपये प्रतिदिन की आमदनी प्राप्त कर रहे है।

संदेश

श्री रामदेव चौधरी ने अपनी मेहनत एवं लगन से कृषि में विभिन्न नवाचारों को अपनाकर न केवल अपनी कृषि में विविधिकरण को बढावा दिया बल्कि अपनी आय को टिकाउ ढंग से बढाकर यह साबित कर दिया है कि उनके लिये खेती घाटे का सौदा नहीं बल्कि आमदनी का बेहतर जरिया होने के साथ ही साथ अन्य कृषि से सम्बंधित विधाओं की स्थापना करने में भी मददगार साबित हो रही है।

2 कृषि विज्ञान केन्द्र - अलवर प्रथम

मधुमक्खी पालन से आई खुशहाली

परिचय

श्री बाबू लाल, गांव–खिलौरा, जिला–अलवर, राजस्थान के प्रगतिशील कृषक है। इनकी आयु 50 वर्ष है एवं दसवीं तक शिक्षित है। इनके पास 2 एकड जमीन है।

योजना

श्री बाबू लाल ने वर्ष 2015 में कृषि विज्ञान केन्द्र, अलवर – 1 से मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू करने की योजना बनाई। अलवर जिले की सरसों का कटोरा के रूप में पहचान हुई है। यहां 2.5 लाख हे. से ज्यादा क्षेत्रफल में सरसों का उत्पादन किया जाता है। जिस कारण मधुमक्खी पालन की विपुल संभावनाऐं हैं। मधुमक्खी पालन सरसों में परागण के द्वारा उत्पादन में वृद्धि करता है।

कार्यान्वयन और सहायता

श्री बाबू लाल ने वर्ष 2015 में कृषि विज्ञान केन्द्र, अलवर–1 से मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण लिया। इसके बाद इन्होंने रु. 1.3 लाख का निवेश कर 50 पेटियों (बॉक्स) के साथ मधुमक्खी पालन का कार्य प्रारम्भ किया। तीन वर्षो के अन्दर इनके बॉक्सों की संख्या 77 से ज्यादा हो गई। वर्तमान में वह एक बॉक्स से लगभग 30 किलोग्राम शहद प्राप्त कर रहे है। उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, डाबर, पतंजलि इत्यादि के खरीददार शहद को 100 से 110 रु. प्रति किलोग्राम के हिसाब से उनके घर से ही खरीद लेते है। जिससे उन्हें विगत तीन वर्षों में लगभग 4.51 लाख रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ है।

परिणाम व प्रभाव

श्री बाबूलाल के मधुपालन उद्यम का यदि आर्थिक विश्लेषण किया जाय तो पता चलता है कि उनके निवेश और उसके बाद की गई मेहनत पर उत्साहवर्धक लाभ प्राप्त हुआ है। मधुमक्खी पालन इन्होंने 400 फ्रेम वाले 50 बॉक्सों के साथ शुरू किया। प्रथम वर्ष में इनका विभिन्न मदों में निवेश पर खर्चा निम्नानुसार रहा –

- 50 बॉक्स (रु. 70 प्रति बॉक्स की दर से 50) = रु. 35,000/–
- 400 फ्रेम (रु. 400 प्रति फ्रेम की दर से 150) = रु. 60,000/–
- अन्य उपकरणों पर व्यय =रु. 10,000/–
- पुनरावर्ति खर्च =रु. 10,000/– एवं
- अन्य व्यय =रु. 15,000/–

इस प्रकार प्रथम वर्ष का कुल खर्च रु. 1,30,000/– आया। द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में खर्च क्रमशः रु. 40,900/– एवं रु. 47,375/– हुआ।

अब यदि आय की बात की जाय तो श्री बाबूलाल को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में कुल आय क्रमशः रु. 1,71,000/– रु. 2,12,150/– एवं रु. 2,86,550/– हुई। यदि वर्ष वार शुद्ध लाभ की बात की जाय तो यह क्रमशः रु. 41,000/– रु. 1,71,250/– एवं रु. 2,39,175/– प्राप्त हुआ। और यदि लाभःलागत अनुपात की गणना की जाय तो यह प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में क्रमशः 0.31, 4.19 एवं 5.05 रहा।

इस तरह देखा जाय तो प्रथम वर्ष के निवेश के बाद अगले वर्षों में खर्च और लाभ का अनुपात बहुत ही अच्छा रहा और बाबूलाल अपनी मेहनत से प्राप्त इस फल को प्राप्त कर बहुत खुश है क्योंकि कृषि आधारित अन्य किसी उद्यम से इतने कम निवेश और मेहनत के इतनी आय हासिल करना असंभव सा लगता है।

संदेश

श्री बाबू लाल के इस नवाचार को देखते हुए क्षेत्र के अन्य 15 व्यक्तियों ने भी मधुमक्खी पालन के उद्यम को अपनाया है, इस आशा और विश्वास के साथ कि इससे उनके भी सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में सुधार होगा और उनके द्वार पर भी खुशहाली दस्तक देगी।

3 कृषि विज्ञान केन्द्र - अलवर प्रथम

उद्यानिकी की उन्नत तकनिकी ने किया मालामाल

परिचय

श्री हरिसिंह गांव–नंगली अलावडा, जिला–अलवर, राजस्थान के प्रगतिशील कृषक है। इनकी आयु 48 वर्ष है एवं दसवीं तक शिक्षित है। इनके पास 2.5 हे. जमीन है।

योजना

श्री हरिसिंह ने वर्ष 2014 में कृषि विज्ञान केन्द्र अलवर–1 से राष्ट्रीय आजीविका मिशन के अन्तर्गत उद्यानिकी की उन्नत तकनीकियों पर 30 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण से पूर्व श्री हरिसिंह परम्परागत खेती करते थे जिससे इन्हे ज्यादा मुनाफा नहीं होता था। श्री हरिसिंह ने प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात सब्जियों की खेती संकर (हाइब्रीड) किस्म के बीजों के उपयोग के साथ शुरू की साथ ही बेर के बगीचे की स्थापना की।

कार्यान्वयन और सहायता

श्री हरिसिंह ने वर्ष 2014 में कृषि विज्ञान केन्द्र अलवर–1 से तकनीकी सलाह व परामर्श प्राप्त करके राष्ट्रीय बागवानी मिशन की सहायता से 1008 वर्ग मी. में पॉली हाउस की स्थापना की। जिसमें खीरे की खेती करना प्रारम्भ किया।

श्री हरिसिंह 0.5 है. क्षेत्र में मुख्य रूप से गाजर व टमाटर की खेती उन्नत किस्मों के संकर (हाईब्रीड) किस्म के बीजों का उपयोग करते है। इन्होनें 0.5 है. क्षेत्र में बेर के बगीचे की स्थापना भी कर रखी है।

परिणाम व प्रभाव

उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में नवीन तकनीकों को अपनाने के फलस्वरूप श्री हरिसिंह को परम्परागत खेती की तुलना में रु. 1.25 से 1.50 लाख ज्यादा आय प्राप्त हो रही है। इनको देखते हुए क्षेत्र के 15–20 अन्य किसानों ने अपने खेतों पर सब्जियों की खेती उन्नत किस्मों के संकर (हाईब्रीड) किस्म के बीजों को अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार किया है।

तालिका: विगत वर्षों में श्री हरिसिंह की उद्यानिकी फसलोत्पादन से आय का विवरण

वर्ष	आय (लाख रुपये में)			कुल आय (लाख रु. में)
	पॉली हाउस	बेर बगीचा	संकर बीजों से सब्जियाँ	
2015	1.70	0.84	0.78	3.32
2016	1.82	0.82	0.72	3.36
2017	1.52	0.87	0.67	3.06
2018	1.86	0.92	0.84	3.62

संदेश

श्री हरिसिंह की उन्नत उद्यानिकी तकनिकों को अपनाकर अपनी आय बढाने और अपने परिवार के लिये खुशहाली लाने का जीता–जागता उदाहरण अन्य कृषक भाइयों के लिये संदेश है कि वे भी इनके नक्शे कदम पर चलकर अपने जीवन को खुशहाल बना सकते है।

4 कृषि विज्ञान केन्द्र - बांसवाड़ा

मुर्गीपालन से अली ने पाया आय के साथ मान

परिचय

श्री अली अकबर बोहरा, गांव–घलकिया, जिला–बांसवाड़ा, राजस्थान के निवासी है। इनकी उम्र 32 वर्ष है और शैक्षणिक योग्यता प्रबंधन प्रशासन निष्णात (एम.बी.ए.) है। कहते हैं अगर हौंसले बुलंद हो तो सारी मुश्किलें उसके सामने घुटने टेक देती हैं। अली की कहानी भी इसी हौंसले की निशानी है। एम.बी.ए. जैसी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद मुर्गीपालन से अपना व्यवसाय प्रारम्भ करने के पीछे अली की कोई विषम परिस्थिति नहीं थी बल्कि आज से चार साल पहले अली कुवैत में नौकरी करता था और तीन साल काम करने के पश्चात् वह अपने गृह जिले बांसवाड़ा लौट आया था।

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

अली को लगा कि वह यहां आकर कोई भी काम कर लेगा पर उसको जब काफी समय तक कोई ऐसा काम नहीं मिला जिसको करने में उसे रुचि लगे तब किसी ने उसे कृषि विज्ञान केन्द्र के बारे में बताया तो उसकी रुचि जागृत हुई और उसने केन्द्र पर सम्पर्क कर यहां की सभी गतिविधियों के बारे में जाना। जब उन्होंने यहाँ की मुर्गीपालन इकाई देखी तो उनकी इच्छा हुई कि मुझे भी यह कार्य शुरु करना है। पशुपालन विषय के विशेषज्ञ वैज्ञानिक से विचार–विमर्श कर उसने आगामी होने वाले प्रशिक्षणों के बारे में पूछा व भाग लेने

अली का बनवाया हुआ कम लागत का ब्रुडर

मुर्गियों के लिये सुरक्षित आवास

मुर्गियां अपने सुरक्षित आवास में

की मंशा जाहिर की। वर्ष 2017 में केन्द्र पर चार दिवसीय मुर्गीपालन प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें अली ने एक–एक पहलू पर पूरी जानकारी प्राप्त की साथ ही वह पुस्तकों का अध्ययन कर एवं इंटरनेट से भी जानकारियां अर्जित करते रहे।

उत्पादन

प्रशिक्षण पश्चात् उन्होंने घर पर मुर्गीपालन की इकाई स्थापित करने की ठानी। इसके लिए अली उदयपुर से 120 चूज़े प्रतापधन प्रजाति के लाया और घर पर ही स्थानीय तकनीक का इस्तेमाल करते हुए बल्ब व थर्मामीटर वाला ब्रूडर तैयार करवा लिया ताकि चूजों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया जा सके। इस तकनीक से उन्होंने शुरुआती दिनों में होने वाली मृत्युदर से चूजों को बचा लिया। अली ने इन चूजों को 20 सप्ताह तक पाला।

परिणाम व प्रभाव

बीस सप्ताह बाद अली ने मुर्गों को 700–1500 रुपए की दर पर बेचा व मुर्गियों को साल भर तक रखा जिनसे लगभग 6000 अण्डों का उत्पादन लिया। इन अण्डों को 10 प्रति अण्डे की दर से बेचा और 90,000/– रुपए की शुद्ध आय प्राप्त की।

आय-व्यय का ब्यौरा

चूजों की संख्या	उत्पादन	विक्रय दर प्रति मुर्गा/अण्डे (रु.)	लागत (रु.)	आय (रु.)	शुद्ध आय (रु.)
130	मुर्गे : 60	700	4550	42000	37450
	अण्डे: 6000	10	7450	60000	52550
		योग	12000	102000	90000

अली ने मुर्गियों के दाने का खर्चा कम करने के लिए एवं चूजों के पौषण हेतु प्रथम सप्ताह से ही कीड़ों की लट (मैगटस) तैयार कर खिलाना शुरु किया। इसके अलावा फार्म पर अजोला यूनिट भी लगाई जिससे उत्पादित अजोला को मुर्गियों को खिलाना प्रारम्भ किया। अजोला के प्रभाव से मुर्गियों की वृद्धि दर बढ़ी एवं मुर्गियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता का भी विकास हुआ। साथ ही मुर्गीशाला में मृत्यु दर बहुत कम रही और इसकी मुर्गीशाला से मुर्गियों एवं मुर्गों की बिक्री भी बहुत जल्दी हुई।

संदेश

अब अली को लगने लगा कि इस फार्म को आगे बढ़ाना चाहिए, तब इसी राशि से उसने दाहोद (गुजरात) से 150 मुर्गी की कड़कनाथ प्रजाति के चूजे व उदयपुर से 250 प्रतापधन प्रजाति के चूजे खरीद और उनके पालन–पोषण की उचित व्यवस्था भी की। वर्तमान में वह उनका भली–भांति पालन कर रहा है। मुर्गीपालन ने अली के जीवन की दिशा ही बदल दी। अली ने ना केवल अपना आर्थिक पक्ष मजबूत किया वरन् समाज में अपनी विशिष्ट पहचान भी बना ली है। गांव के लोगों के बीच आदर्श किसान की मिसाल प्रस्तुत करने वाले अली के हौंसले बुलंद हैं और आदिवासी किसानों को मुर्गीपालक के रुप में उभरने के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

5 कृषि विज्ञान केन्द्र - बांसवाड़ा

टमाटर की लाली से जीवन में छाई खुशहाली

परिचय

सही निर्णय लेकर अगर सही समय पर सही खेती की जाये तो किसान पाँच महीने की एक फसल में ही एक हैक्टेयर से पॉच लाख रुपये का उत्पादन प्राप्त कर सकता है। और यह कर दिखाया गाँव–अमरथुन, जिला–बांसवाड़ा, राजस्थान के युवा कृषक श्री लक्ष्मण चरपोटा ने। लक्ष्मण कक्षा पांच तक शिक्षा प्राप्त कर पिछले पाँच–छः साल से खेती कर रहा था। सामान्यतः उसकी 5 बीघा जमीन पर खरीफ में मक्का, सोयाबीन एवं रबी में गेहूं एवं रबी मक्का की खेती कर औसतन 10 से 12 हजार रुपये प्रति बीघा की सकल आय प्राप्त करता था। जिससे वह हमेशा असन्तुष्ट रहा और कुछ नया करना चाहता था।

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

इसी सोच के तहत् श्री लक्ष्मण कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आया जहां उसने टमाटर उत्पादन का प्रशिक्षण लेकर वैज्ञानिक देख–रेख में 1.0 बीघा में टमाटर की संकर (हाईब्रिड) किस्म–देव की खेती करने की तरफ पहला कदम बढ़ाया।

श्री लक्ष्मण के खेत पर टमाटर की उन्नत तरीके से तैयार फसल

उत्पादन

श्री लक्ष्मण ने वर्ष 2018 के नवम्बर माह के प्रथम सप्ताह में टमाटर की पौध लगाकर दिसम्बर के द्वितीय सप्ताह में तुड़ाई प्रारम्भ कर दिनांक 30 मार्च तक उसने 148 क्विंटल टमाटर 1.0 बीघा खेत से उत्पादित कर बाजार में बेचा।

परिणाम व प्रभाव

इन टमाटरों को बेचने से श्री लक्ष्मण को 89,000 रुपये की सकल आय प्राप्त हुई। खेती में उसका 26,000 का आदान खर्च निकालने के बाद उसे 63,000 रुपये की शुद्ध आय प्राप्त हुई। उपरोक्त पाँच माह के कम समय में हुई आय से श्री लक्ष्मण ने इसी साल 2 बीघा जमीन एवं 1 भूखण्ड खरीद लिया। श्री लक्ष्मण आगामी अगस्त माह में टमाटर के अतिरिक्त मिर्च, बैंगन व फूलगोभी की खेती की पूरी तकनीकी जानकारी कृषि विज्ञान केन्द्र, बांसवाड़ा से प्राप्त करके बड़ो पैमाने पर खेती की योजना बनायी है।

संदेश

आगामी ऋतुओं में भी श्री लक्ष्मण ने सही समय पर सही वैज्ञानिक तरीके से सब्जियों की खेती करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है। उसकी इस सफलता को देखकर अन्य कई कृषक भी सब्जियों की खेती की तरफ अपना मानस बना रहे है।

6 कृषि विज्ञान केन्द्र - बांसवाड़ा

हुनर ने दिलाई स्वयं सहायता समूह को पहचान

परिचय

वैसे तो कृषि विज्ञान केन्द्र–बांसवाड़ा ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में कई कदम उठाये है ओर सफलता भी हासिल की है और ज्यादातर सफल कहानियों की हकदार अकेली महिला ही होती थी लेकिन पहली बार किसी स्वयं सहायता समूह ने जिले मे अपने हुनर के बल पर अपनी पहचान बनाई है। वर्ष 2011 की बात है तब कृषि विज्ञान केन्द्र–बांसवाड़ा पर राजस्थान आजीविका मिशन द्वारा प्रायोजित टेलरिंग का 80 दिवसीय महिला प्रशिक्षण चल रहा था। उस समय मुख्य प्रशिक्षक के रुप मे श्रीमती प्रभा सोनी प्रशिक्षणार्थियो को सिलाई कला का प्रशिक्षण दे रही थी। 80 दिनो तक साथ काम करते करते सभी के बीच एक आत्मीय सबधं स्थापित हो गया था। प्रशिक्षण जब समाप्ति पर था तब कृषि विज्ञान केन्द्र–बांसवाड़ा की तकनीकी सहायक श्रीमती रश्मि दवे ने प्रयास किया कि सभी को एक समूह द्वारा जोड़ दिया जाए जिससे सभी हर महीने मिल पायेंगे व साथ काम कर पायेगें।

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

सभी प्रशिक्षणर्थी तैयार हो गये व उन महिलाओं का एक समूह बनाया गया जिसका नाम रखा गया ''माँ त्रिपुरा स्वयं सहायता समूह'', अब हर महीने केन्द्र पर मासिक बैठक होने लगी व सभी रुचिपूर्वक भाग लेकर काम कर रही थी। फिर इस समूह को बैंक से जोड़ने की कवायद शुरु की गयी। ग्रामीण विकास ट्रस्ट के माध्यम से इस समूह को बैंक से जोड़ा गया। समूह में मुख्य प्रशिक्षक सहित 14 महिलायें थी। बैंक से जुड़ने के

नाबार्ड द्वारा उत्कृष्ट समूह के रुप में सम्मानित

प्रशिक्षण प्राप्त करती हुई समूह की महिलायें

बाद समूह मे आत्मविश्वास की वृद्धि हुई। सभी बारी–बारी से ऋण (लोन) लेकर सिलाई करने लगी। अब तक सभी अपने–अपने घर पर ही सिलाई कार्य कर रही थी। तभी समूह की अध्यक्ष व कृषि विज्ञान केन्द्र की तकनीकी सहायक ने योजना बनाई कि क्यों ना समूह का एक बूटीक खोला जाये ओर इस विचार को सार्थक करने का भरसक प्रयास किया गया व समूह की अध्यक्ष ने पहल करके बांसवाड़ा का पहला डिजाइनर बूटीक ''रुप सुन्दरी'' के नाम से खोला।

प्रशिक्षण के दौरान मशीन से सिलाई करने का अपना हुनर सिखते हुए

उत्पादन

शुरु–शुरु में तो महिलाओ को बहुत परेशानी हुई क्योंकि धन पर्याप्त नही था लेकिन उनके हाथ के हुनर के आगे सारी परेशानियो ने घुटने टेक दिये। बूटीक ने रफ्तार पकड़ी व आसपास के लोगो ने अपने डिजाइनर परिधान बनवा कर उनके काम को सराहा।

परिणाम एवं प्रभाव

एक–एक कर स्वयं सहायता समूह की सभी महिलायें बूटीक से जुड़ गयी कुछ को घर के लिये सिलाई कार्य दिया जाता, कुछ को मार्केटिंग सीखाई गयी। कुछ महिलायें बूटीक ही सभांलती। आखिरकार बूटीक का सब खर्चा सिले हुये वस्त्रो की सिलाई से निकलने लगा ओर रुप सुन्दरी बूटीक ने बांसवाड़ा शहर में अपनी पहचान बना ली। उन्हीं दिनों बांसवाड़ा मे फैशन शो आयोजित होने वाला था। प्रायोजकों ने रुप सुन्दरी बूटीक को यह अवसर प्रदान किया कि वे इस शो में अपने परिधानों का प्रचार करे। समूह की सभी महिलाओं ने इस शो की तैयारियां जोरशोर से शुरु कर दी, दिन–रात मेहनत करके डिजाइनर कपड़े राजस्थानी थीम को लेकर बनाये व फैशन शो के लिये रेम्प पर चलने का भी प्रशिक्षण लिया। शो वाले दिन सभी उत्साहित थी ओर उन्होंने अपना कार्यक्रम पेश किया। शहरवासियों की भरपूर तालियों के बीच उनके परिधानों को खूब सराहना मिली ओर समूह को खूब सारे आर्डर मिले। लोन की सभी किश्ते समय पर जमा होने के कारण बैंक लिंकेज कार्यक्रम के तहत इस समूह को उत्कृष्ट समूह के रुप में सम्मानित किया गया व सभी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। समूह की सभी महिलायें बहुत खुश है क्योंकि इस समूह ने उन्हें आज साधारण महिला से सफल उद्यमी के पायदान तक पहुँचा दिया है।

संदेश

इस समूह की सफलता को देखते हुये केन्द्र का प्रयास है कि ऐसे ही लम्बी अवधि के प्रशिक्षणों मे कृषक महिलाओं के स्वयं सहायता समूह बनाकर उनको आर्थिक व सामाजिक लाभ दिलाया जा सके।

7 कृषि विज्ञान केन्द्र - बाड़मेर प्रथम (दांता)

'बरही' खजूर ने दिलाई जय सिंह को नई पहचान

परिचय

श्री जयसिंह राठौड़ पुत्र श्री बख्तावर सिंह राठौड़, गांव– भीयाड़, तहसील– शिव, जिला– बाड़मेर, राजस्थान के निवासी है। इनकी उम्र 65 वर्ष है और इनके पास खेती की 10 हैक्टेयर जमीन है। श्री जय सिंह राठौड अपने जिले में किसी परिचय के मोहताज नहीं है वह अपने द्वारा उत्पादित खजूर की गुणवत्ता के लिए विख्यात है।

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

स्नातक शिक्षा प्राप्त कर सरकारी उच्च पद पर नौकरी से सेवानिवृत्ति के बाद कुछ नया करने के विश्वास के साथ समाचार पत्रों में 'जी हुजूर थार में खजूर' से प्रभावित होकर खजूर बगीचा लगाने की ठानी और इसका बगीचा लगाने के लिए प्रयास हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र बाड़मेर–प्रथम (दांता) एवं कृषि विभाग बाड़मेर से जानकारी प्राप्त करते हुए उनके अप्रवासी भारतीय मित्र के लगी खजूर बगीचे से प्रभावित होकर वर्ष 2010 में 2.0 हैक्टेयर में खजूर की 'बरही' किस्म के 312 पौधे लगाकर शुरूआत की।

अपने 'बरही' खजूर के बगीचे में श्री जयसिंह

उत्पादन

राठौड़ ने बताया कि उत्पादन पर नहीं गुणवत्ता पर ध्यान देता हूँ इसलिये फार्म पर 20 से 25 बकरियां भी पाल रखी है ताकि खजूर के बगीचे हेतु खाद की आपूर्ति की जा सके। जयसिंह राठौड़ के खजूर के फल सेव बेर के आकार के बराबर और पूर्णतः मीठे होते हैं। उन्होंने बताया कि वर्ष 2016–17 में 300 क्विंटल खजूर का उत्पादन हुआ और एक फल का औसत वजन 6 से 12 ग्राम था, इसके विपरीत वर्ष 2017–18 में उत्पादन 225 क्विंटल हुआ है लेकिन इस वर्ष एक फल का औसत वजन 18 से 22 ग्राम रहा है।

परिणाम व प्रभाव

श्री जयसिंह ने बताया कि वर्ष 2017–18 में अपने खजूर उन्होंने 35 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव बेचे और इससे उन्हें 7.00 लाख रुपये की कुल आय हुई और शुद्ध आय के रूप में लगभग 5.00 लाख रुपये प्राप्त हुए। इस तरह लाभ:लागत का अनुपात लगभग 3.5 रहा। श्री जय सिंह के अनुसार उनकों खजूर के परागण में समस्या आती है क्योंकि स्थानीय स्तर पर नर पौधे नहीं होने से पराग कण नहीं मिल पाते हैं तथा उत्पादन के बाद फलों के भण्डारण की व्यवस्था नहीं होने के कारण विक्रय में दिक्कत आती है और मण्डी तक परिवहन में बहुत खर्चा आता है। श्री जयसिंह ने बताया कि उनके यहाँ जिले के कृषकों के साथ–साथ सरकारी अधिकारी व जिले के बाहर के कृषक भी जानकारी लेने हेतु आते हैं। कई कृषक जानकारी के साथ–साथ मेरे पौधों में लगने वाले अंतःभूस्तारी (सकर्स) को लेकर जा रहे हैं जिससे मुझे अतिरिक्त आय भी प्राप्त हो रही है।

संदेश

श्री राठौड़ खजूर उत्पादन में कुछ समस्याओं के बावजूद अपनी कमाई से खुश है और इस वर्ष 2018 में 01 हैक्टेयर में खजुर की 'खुनैजी' किस्म के पौधों के साथ अपने खजूर बगीचे के क्षेत्र में वृद्धि की है तथा भविष्य में अनार का बगीचा लगाने की योजना बना रहे है।

श्री जयसिंह के 'बरही' किस्म के खजूर के बगीचे का एक दृश्य

8 कृषि विज्ञान केन्द्र - बाड़मेर प्रथम (दांता)

बाड़मेर में रजत क्रांति का पर्याय हमीद अली

परिचय

श्री हमीद अली पुत्र श्री गुलाब खां, गांव– राणीगांव, जिला–बाड़मेर, राजस्थान के निवासी हैं। बाड़मेर जैसे विशाल क्षेत्र में कृषकों के पास जमीन की बहुतायत होते हुए भी बार–बार पड़ने वाले अकाल और पानी के साधनों के अभाव को देखते हुए जीवनयापन भी एक चुनौती रही है। इन कठिन परिस्थितियों में कृषकों का जीविकोपार्जन एक चिन्तनीय विषय है। इन विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए यहाॅ के कृषकों ने कई नवाचारों को जन्म देकर जिले को एक नई पहचान दिलाई हैं जैसे खजूर एव अनार में आज बाड़मेर का अपना ही मार्का पहचान बनता जा रहा है। इनके साथ पशुपालन क्षेत्र में ऐसा कुछ नवाचार किया हमीद अली ने।

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

हमीद अली वर्षा आधारित खेती अपनाकर परिवार का पालन–पौषण कर रहे थे। एक दिन परिवार के साथ टीवी देख रहे थे तो उन्हें मुर्गीपालन पर आधारित कार्यक्रम से मुर्गीपालन शुरू करने का विचार आया और उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, दांता–बाड़मेर से सम्पर्क कर मुर्गीपालन के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए मुर्गीपालन व्यवसाय शुरू करने की ठान ली और राज्य कुक्कुट पालन प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर से मुर्गीपालन का व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

श्री हमिद अली अपनी मुर्गीपालन इकाई में 'व्हाइट लेग हॉर्न' मुर्गियों के साथ

उत्पादन

हमीद ने इस प्रशिक्षण प्राप्ति के पश्चात मुर्गीपालन का दृढ़ निश्चय करते हुए अपने सीमित संसाधनों को ध्यान में रखते हुए पूर्ण विश्वास के साथ पारिवारिक मदद से 100′36′ फीट आकार का डीप लीटर प्रणाली आधारित मुर्गीघर का निर्माण कराते हुए 2500 'व्हाइट लैग हॉर्न' प्रजाति के चूजों से अपने नए व्यवसाय की शुरूआत फरवरी 2017 में की। वर्तमान में उनके पास 2000 मुर्गियां है औसतन 1800 अण्डे प्रतिदिन उत्पादन हो रहा है

परिणाम व प्रभाव

मुर्गीपालन के नवाचार के रूप में हमीद अली जिले में अपनी पहचान बना चुके हैं और उनके अनुसार उनका इस इकाई पर प्रति माह लगभग 1,20,000 रुपये का खर्च आता है जिसमें दाना–पानी, मुर्गियों के स्वास्थ्य हेतु टीकाकरण व अन्य विविध व्यय होता है। इसके साथ ही हमीद अली ने दो बेरोजगार युवकों को 10,000/– प्रति माह की दर से रोजगार दे रखा है। श्री अली के अनुसार उन्हें अण्डे की कीमत दर 3.5 रुपये प्रति अण्डे मिल जाती है। इस तरह उन्हें प्रतिमाह औसतन रुपये 1,89,000/– की कुल आय हो रही है। इस तरह उन्हें प्रति माह लगभग 49,000/– रुपये की शुद्ध आय हो जाती है जिसका लाभ:लागत अनुपात लगभग 1.35 बैठता है जो दर्शाता है कि श्री अली का मुर्गीपालन उन्हें अच्छा मुनाफा दे रहा है।

श्री हमीद अली बताते है कि मुर्गीपालन से मेरी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में इजाफा हुआ है साथ ही मुझे उस समय खुशी मिलती है जब अन्य कृषक एवं विभिन्न अधिकारी मेरे यहां मुर्गीपालन देखने आते है और मेरे कार्य की तारीफ करते हैं।

संदेश

श्री हमीद अली बताते है चार–पांच स्थानीय कृषक मुझे देखकर यह व्यवसाय करने को आतुर है। मैं भविष्य में मुर्गीपालन व्यवसाय को वृहद रूप में करना चाहता हूँ जिससे बाड़मेर जिले के वासियों को बाड़मेर में उत्पादित ताजा अण्डा हर समय उपलब्ध हो सके।

श्री हमिद अली अपनी मुर्गीपालन इकाई में आंगतुकों की जिज्ञासाओं को शांत करते हुए।

9 कृषि विज्ञान केन्द्र - भरतपुर

फसल विविधीकरण से आर्थिक समृद्धि

परिचय

श्री अतिभान सिंह पुत्र श्री सुन्दर लाल, गांव –मुकुंदपुरा, पोस्ट– पला, तहसील –कुम्हेर, जिला–भरतपुर (राजस्थान) के निवासी है। ये 9वीं तक शिक्षित है और इनकी उम्र 62 वर्ष है। इनके पास कुल 3 हैक्टेयर कृषि भूमि है और सिंचाई का साधन नलकूप है और ये सरसों, गेहूँ, सब्जियो एवं पुष्प उत्पादन करते है। इनके पास पशुधन के रूप में तीन भैंसें और 15 बकरीयां है।

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

कृषि विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) में 'जलवायु समुत्थानशील कृषि में राष्ट्रीय नवाचार परियोजना–' के अर्न्तगत वर्षा जल संग्रह व पुर्नउपयोगिता से सब्जियों की सफलतापूर्वक खेती से आर्थिक स्वालम्बन हासिल किया है। मुकुंदपुरा गांव की अधिकांश खेती वर्षा आधारित थी वर्ष 2013 तक यहाँ के किसान वर्षा आधारित सरसों, गेहूँ व जौ की फसले लेते आ रहे थे। कोई भी किसान सिंचाई की सुविधा के अभाव में सब्जियों की खेती नहीं करता था। श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय के तहत कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर–भरतपुर द्वारा जलवायु समुत्थानशील कृषि में राष्ट्रीय नवाचार (निकरा) में वृहद स्तर पर नलकूप (ट्यूबवेल) पुनर्भरण (रिचार्ज) का कार्य होने से नलकूपों में जल स्तर बढ़ने के साथ–साथ सिंचाई के पानी की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। कृषि विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर के वैज्ञानिको द्वारा निरंतर आय व टिकाऊ

उत्पादन लेने के लिए सब्जियों व फूलों (गेंदा) की खेती को बढ़ावा देने के लिए यहाँ के किसानो को संस्थागत एवं गैर संस्थागत प्रशिक्षण के माध्यम से कौशल विकसित किया गया।

उत्पादन

कुछ किसानों ने फसल विविधीकरण को अपनाते हुए खेती शुरू कर दी है उनमें से एक श्री अतिभान भी हैं। श्री अतिभान के फार्म हाउस पर पशुओं के लिए बनाया गया पशु बाड़ा तथा केचुआ खाद इकाई भी है। इन्होने एक छोटा छायादार घर (शेडनेट) भी बनवाया है। इस छायादार घर में वैज्ञानिक तरीकों से सब्जियों विशेषकर टमाटर, बैगन, मिर्च व फूलों में गेंदा की उत्तम गुणवत्ता की पौध तैयार करते हैं। इसके साथ–साथ प्लास्टिक की प्रो ट्रे जिसमें कोकोपीट का मिश्रण भर कर भी सब्जियों की पौध तैयार करते है। श्री अतिभान मुख्त रूप से जैविक खाद जैसे गोबर की खाद, केंचुआ खाद, ढैंचा की हरी खाद आदि का अधिक से अधिक प्रयोग करते है।

इन्होंने वैज्ञानिकों की सलाह पर फसल चक्र, उन्नत किस्म, समन्वित कीट एवं व्याधि प्रबंधन तथा समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन आदि आधुनिक कृषि क्रियाये अपनाई है। पिछले 2 वर्षों से (2015–16 और 2016–17) इन्होंने एक हेक्टेयर से सब्जियों व फूलों के उत्पादन से प्रति वर्ष 1.5 लाख रुपये की आमदनी प्राप्त की है सब्जी मंडी में उच्च गुणवत्ता की पैदावार के कारण इनकी सब्जियों की अच्छी कीमत मिलती है। इन्होंने आमदनी को बढ़ाने के लिए 15 बकरियों भी पाल रखी हैं जिससे ये लगभग 70–75 हजार रुपये प्रति वर्ष अतिरिक्त आमदनी प्राप्त करते हैं।

परिणाम व प्रभाव

वर्तमान में ये जैविक तरीके से सब्जिओं की खेती करने की योजना बना रहे है। कुछ नया करने की इच्छा के कारण छत के वर्षा के पानी (रूफ वाटर हार्वेस्टिंग) को इकठ्ठा कर तथा नलकूप को पुनर्भरण करने के कारण अतिभान ने सब्जियों को फसल विविधीकरण के रूप में

अपना कर परम्परागत फसलों की तुलना में पाँच गुना अधिक आय प्राप्त कर अपने आप को नवाचारी व प्रगतिशील कृषको की सूची में सम्मलित कर लिया है। ये लगभग एक हैक्टर क्षेत्र में बेर, अनार, अमरुद का बगीचा लगाने की योजना बना रहे है।

कृषि विज्ञान केन्द्र से प्रेरित होकर व जिले के कृषि विभाग, उद्यान विभाग व राष्ट्रीय सरसों अनुसन्धान निदेशालय, प्रसार शिक्षा निदेशालय, जोबनेर, पूसा प्रगति मेला दिल्ली आदि कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी निभाते हैं। इनसे प्रेरित होकर इनके गांव व आस–पास के गांव के किसान भी फसल विविधीकरण के रूप में सब्जियों की खेती शुरू कर चुके हैं। किसान समूह इनके फार्म पर जाकर कृषि गतिविधियों का अवलोकन कर लाभान्वित हो रहे हैं।

संदेश

श्री अतिभान की इच्छा है की वे बारानी व सिंचित दोनों परिस्थितियों में सब्जिओं, फूलों व फलों की खेती के लिए मॉडल बनना चाहते हैं। जिससे कृषकों को वर्ष भर सतत और बेहतर आय मिल सकें। साथ ही कृषि निवेश पर व्यय करने की क्षमता में वृद्धि के साथ ही साथ सामजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

10 कृषि विज्ञान केन्द्र - बीकानेर प्रथम

समन्वित कृषि प्रणाली बनी बेहतर आय का जरिया

परिचय

श्री जय नारायण जाट पुत्र श्री उदा राम जाट, ग्राम–चक 496, आर.डी.एल., शरह कुंजीय, बीकानेर, तहसील एवं जिला– बीकानेर (राजस्थान)–334002 के निवासी है। ये साक्षर है इनकी आयु 63 वर्ष और इनको खेती का 40 वर्ष का अनुभव है। इनके पास 4.25 हैक्टर सिंचित जमीन है। जिस पर ये खरीफ में मूँगफली, ग्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, हरा चारा, बाजरा एवं ज्वार चारी और रबी मे गेंहूँ, जौ व चना, हरा चारा और जई की खेती करते है। इन्होंने नींबू और बेर का बगीचा लगा रखा है जिसमें क्रमशः 60 व 30 पेड़ है। ये सब्जियां भी उगाते है जिसमें मुख्य है– टिंडा, लौकी, तरककड़ी, तोरई, मूली एवं गाजर है। इनके पास 5 संकर नस्ल व 1 राठी गाय व 3 बछड़ियों का पशुधन है। ये डिग्गी में मछली पालन का कार्य भी करते है।

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

श्री जय नारायण जाट साक्षर ही है, आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण आगे की पढाई नहीं कर सके। लगभग 10 वर्ष पहले, यानी वर्ष 2008 में, ये अपनी 4.25 हैक्टर सिंचित कृषि भूमि में फसल उत्पादन से होने वाली आय से संतुष्ट नहीं थे। अतः उन्होंने खेती में ही कुछ नया करने की सोची ताकि अतिरिक्त आमदनी मिले तथा घर भी नहीं छोड़ना पड़े।

श्री जय नारायण वर्ष 2008 से लगातार कृषि विज्ञान केन्द्र, बीछवाल, बीकानेर के संपर्क में रहकर लघु एवं दीर्घ अवधि के प्रशिक्षणों मे भाग लेकर कृषि, बागवानी, पशुपालन एवं मछली पालन के नवाचरों को अपनाया है और खेती में 'समन्वित कृषि प्रणाली' विकसित कर ली है। अपने क्षेत्र मे लगभग 10 वर्ष से कृषि में नवाचार करके अपनी पहचान एक प्रगतिशील कृषक, पशुपालक एवं सब्जी उत्पादक के रूप मे बनाई है। सामाजिक तथा राजनैतिक स्तर पर क्षेत्र में इन्हें 'किसान मित्र' के रूप में जाना जाता है।

उन्नत नस्ल (राठी व संकर नस्ल) की गाये

हरा चारा–ज्वार चरी

धीरे–धीरे इन्होंने फसल उत्पादन के साथ सब्जी उत्पादन, पशुपालन व बागवानी को भी अपनाया। जय नारायण जी फसल उत्पादन के लिये सभी मुख्य फसलों की उन्नत किस्मों को अपनाकर बेहतर पैदावार ले रहे है, यथा मूँगफली की एच.एन.जी.–69, ग्वार की आर.जी.सी.–1066, बाजरा की राज–177, मूंग की एस.एम. एल.– 668, मोठ की आर.एम.ओ.– 435, हरा चारा व बाजरा की एस.एफ.डी.–11, ज्वार चरी की एम.एफ.एस. एच.–4, गेंहूॅ की राज–3765, जौ की आर.डी.–2552, चना की जी.एन.जी.–663, हरा चारा जई की केंट–यूपीआ–212।

कृषि के साथ–साथ पशुपालन अपनाने से जय नारायण जी को अपने खेतों के लिये गोबर की खाद पर्याप्त मात्र मे उपलब्ध होने के कारण रासायनिक खादों पर खर्चा कम होने लगा, बागवानी में अच्छा उत्पादन मिलने लगा एवं आय में भी काफी बढ़ोतरी होने लगी। भूमि की उर्वरा क्षमता में भी सुधार होने लगा और जैविक खेती के तौर–तरीके अपनाने से भूमि की दशा सुधरने लगी।

उत्पादन

श्री जय नारायण ने अपनी जमीन पर 60 पौधे नींबू के व 30 पौधे बेर के लगाये हुये हैं। फसल उत्पादन के साथ–साथ ये सब्जी उत्पादन भी करते हैं। अधिकतर सब्जी खेत पर ही बिक जाती है। इनके पास जर्सी व राठी नस्ल की गायें व बछड़ी हैं, जिनसे 30 लीटर दूध प्रति दिन के हिसाब से बेच देते हैं। एक डिग्गी है जो सिंचाई एवं मछली पालन के काम आती है। इनको फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, फलदार वृक्षों, गायों के दूध एवं मछली पालन से और बछड़ी पालकर गाय बनाकर बेचने से लगभग 8.75 लाख रुपयों की वार्षिक आमदनी हो जाती है।

बेर बगीचा

नींबू का बगीचा

मछली पालन की डिग्गी

परिणाम व प्रभाव

- दूध उत्पादन से उसे प्रतिदिन आय हो रही है तथा खाली समय का सदुपयोग भी हो रहा है।
- खेत में लगातार गोबर की खाद डालने से भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ी है तथा उनके खेत पर फसल उत्पादन गांव के अन्य किसानों से अधिक होता है।
- खेती व पशुपालन एक दूसरे के पूरक होने के कारण जय नारायण जी के पास उपलब्ध सभी संसाधनों का बेहतर उपयोग हो रहा है।
- जय नारायण जी को अपनी समन्वित कृषि प्रणाली से प्रतिवर्ष 8.75 से 9.0 लाख रुपये की शुद्ध आमदनी होती है, जिससे उनके सामाजिक व आर्थिक स्तर में सुधार हुआ है।

संदेश

श्री जय नारायण जी वर्तमान में फसल उत्पादन से घट रही आमदनी में कृषकों तथा युवाओं के लिए 'समन्वित कृषि प्रणाली' से अधिक आमदनी प्राप्त करने का प्रेरणा स्रोत है। इनका कहना है कि समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने से न केवल आमदनी बढती है बल्कि संसाधनों का बेहतर उपयोग व संरक्षण भी होता है जिससे खेती से निरंतर व टिकाऊ आय प्राप्त करना संभव होता है।

11 कृषि विज्ञान केन्द्र - चुरू प्रथम

मनीराम ने जैव फंफूदनाशी द्वारा किया मूंगफली के काली जड़ रोग का प्रभावी प्रबंधन

परिचय

चूरू जिला राजस्थान के थार रेगिस्तान क्षेत्र में स्थित है। सरदारशहर चूरू जिले की एक मुख्य तहसील है। सरदार शहर के आस–पास का का भूमिगत जल खारा है। किसानों के लिए सिंचाई के मुख्य स्रोत वर्षा जल एवं कुएं है। जिले में खरीफ में मूंगफली की फसल सिंचित क्षेत्र के मुख्य तिलहन के रूप में 52,509 हैक्टेयर में ली जाती है जो राजस्थान के कुल हिस्से का 9.44 प्रतिशत है ।

मूंगफली की फसल में मुख्य रूप से काली जड़ (कोलर रोट) बीमारी से नुकसान अधिक होता है जिसे मूंगफली का कैंसर भी कहते हैं। यह बीमारी एस्परजिलंस नाइजर फंफूद के द्वारा होती है जो तापमान बढने के साथ ही उग्र रूप धारण कर लेती है, चूंकि चूरू जिले में अधिकतम तापमान जनू के प्रथम पक्ष में 49–50० सेल्सियत तक हो जाता है, जो इस बीमारी को बढाने में सहायक होता है। इस बीमारी के प्रकोप से पौधे का तना भूमि की सतह के पास से गलना शुरू होता है एवं यह गलन जड़ों तक पहुँच जाता है। भूमि की सतह के पास तने पर फंफूद, काले पाउडर के रूप में देखी जा सकती है।

योजना, क्रियान्वयन और सहायता

कृषक मनीराम गांव भादासर के रहने वाले है जो सरदारशहर से 25 किमी दूरी पर है। मनीराम की आजीविका मुख्य रूप से कृषि पर ही निर्भर है, परन्तु वैज्ञानिक विधि की जानकारी के अभाव में इनका प्रति इकाई उत्पादन काफी कम था एवं मूंगफली की फसल में काली जड़ बीमारी के कारण नुकसान काफी अधिक था। मनीराम जाखड़ उत्साही, ऊर्जावान एवं नई जानकारी सीखने वाले जुझारू युवक है। वह कृषि विज्ञान केन्द्र, चूरु–प्रथम के सम्पर्क में आये एवं केन्द्र द्वारा जैव फंफूदनाशी ट्राइकोडर्मा द्वारा भूमि एवं बीज उपचार पर दिये जाने वाले जागरूकता प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान ट्राइकोडर्मा द्वारा भूमि एवं बीज उपचार तकनीकी पर प्रायोगिक अनुभव प्राप्त कर इसे अपने खेत पर अपनाया।

अपने पूर्व अनुभव बताते हुए मनीराम ने कहा कि उसने पूर्व में मूंगफली की फसल में कभी भी ट्राइकोडर्मा का उपयोग नहीं किया लेकिन ट्राइकोडर्मा द्वारा भूमि उपचार मूंगफली में काली जड़ प्रबंधन एवं उत्पादन बढाने में प्रभावी सिद्ध हुआ है।

मनीराम की जागरूकता को देखते हुए केन्द्र द्वारा उसके खेत पर मूंगफली में काली जड़ रोग प्रबंधन हेतु ट्राइकोडर्मा (जैव फंफूदनाशी) के अनुसंधान परीक्षण एवं प्रदर्शन के रूप में प्रयोग किया जिसके परिणामों से उत्साहित मनीराम ने उसके क्षैत्र के अन्य किसानों को भी बताया।

उत्पादन एवं परिणाम

गांव के कृषकों ने इस प्रगतिशील किसान के खेत पर लगे परीक्षण एवं प्रदर्शन इकाई का दौरा किया एवं अच्छे परिणाम, कम लागत एवं ट्राइकोडर्मा के मूंगफली की फसल में कोलर रोट प्रबंधन की प्रभावशीलता से

प्रभावित होकर अपने खेतों में भी भूमि उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा का उपयोग कर रहे हैं। परीक्षणों में पाया गया कि कृषक विधि (भूमि उपचार नहीं करना) से मूंगफली की खेती करने पर औसत उपज 30.72 क्विंटल प्रति हेक्टेयर व सकल आय रु. 1,35,868/– रही जबकि ट्राइकोडर्मा हारजिएनम 5 किलोग्राम प्रति 100 किलोग्राम गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर द्वारा भूमि उपचार करने पर मूंगफली की औसत उपज 39.68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रही जो कि कृषक विधि से 29.16 प्रतिशत अधिक थी और सकल आय रुपये 1,74,240/– रही जो कृषक विधि से रुपये 37,672/– अधिक थी।

प्रभाव

कृषक द्वारा प्रति हैक्टेयर 625 रू. ट्राइकोडर्मा से भूमि उपचार पर खर्च करने पर 8.96 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की अतिरिक्त उपज प्राप्त की गई। ट्राइकोडर्मा के उपयोग से मूंगफली की फसल में काली जड़ (कोलर रोट) प्रबंधन को आसान पर्यावरण के अनुकूल एवं सस्ती तकनीक के लाभों को देखते हुए भादासर गांव व जिले के कई किसानों के इसे अपनाया है। कृषकों का कहना है कि उन्हें ट्राइकोडर्मा के उपयोग से कम लागत में अच्छे परिणाम मिल रहे हैं तो वह क्यों महंगें रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग करें, कृषक यह भी समझने लगे कि यह न केवल अच्छे परिणाम प्रदान करता है बल्कि पर्यावरण को भी बचाता है।

संदेश

श्री मनीराम का कहना है कि इनकी कम लागत की तकनीकी उपयोग कर और थोड़ी सी मेहनत कर यदि हम मूंगफली की फसल से हजारों रुपयों की अधिक आमदनी ले सकते है तो बुद्धिमानी तो इस तकनीक को अधिक से अधिक अपनाने व उत्पादन बढाने में ही है।

12 कृषि विज्ञान केन्द्र - चुरु द्वितीय

रेगिस्तान में तरबूज की बहार

परिचय

'मन में कुछ कर गुजरने का सपना हो तो राहें अपने आप बन जाती हैं' कहावत को सिद्ध कर दिखाया श्री सत्यवीर सिंह फौजी ने, जिन्होंने राजस्थान की तपती गर्मी में रेत के धोरों में तरबूज की फसल को लहलहा दी।

श्री सत्यवीर सिंह फौजी राजस्थान के चुरू जिले के छोटे से गाँव डिंगली के निवासी हैं। श्री सत्यवीर सिंह ने 21 वर्षों तक भारतीय सेना में अपनी सेवाएं दी। भारतीय सेना से सेवानिवृति के बाद श्री फौजी ने शहर की बजाय गाँव में रहने का फैसला किया। गाँव में श्री फौजी के पास 2 हैक्टयेर पुश्तेनी जमीन है। चुरू जिला थार के मरुस्थल के अंतर्गत आता है। यहाँ खेती के लिए मौसम हमेशा प्रतिकूल रहता है। यहाँ पर गर्मियों में बहुत गर्म लू तथा सर्दियों में शीत लहर चलती हैं। भूमिगत जल का स्तर कम होने के कारण यहाँ किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी नही मिल पाता। इन सबके बावजूद श्री फौजी ने खेती की उन्नत तकनीक अपनाई और आस पास के किसानों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने।

तकनीकी ज्ञान के अभाव में प्रारम्भ में श्री फौजी ने परम्परागत तरीके से खेती की शुरुआत की लेकिन यहाँ की जमीन का कम उपजाऊ होना तथा सिंचाई के लिए प्रयाप्त पानी उपलब्ध ना होने की वजह से खेती

घाटे का सौदा साबित हुआ। श्री फौजी ने बताया की उनके खेत में केवल 3 से 4 फव्वारे ही चलते हैं जिसमे परंपरागत खेती संभव नही है।

योजना, कार्यान्वयन और सहायता

मंजिलें उन्ही को मिलती हैं जिनके हौंसले बुलंद होते हैं। श्री फौजी ने हार नही मानी और कम पानी में अच्छी फसल लेने के किये नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र, चूरु–2 (चाँदगोठी) में संपर्क किया। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने श्री फौजी को कम पानी में अच्छी फसल लेने तथा पानी की बचत करने के लिए अपने खेत में बूंद–बूंद सिंचाई पद्धति (ड्रिप इरिगेशन सिस्टम) लगवाने की सलाह दी और सब्जियों की उन्नत तकनीक के बारे में बताया। श्री फौजी ने कृषि विज्ञान केन्द्र की सब्जी इकाई पर भ्रमण किया तथा वैज्ञानिकों की सलाह से प्रभावित होकर अपने खेत में ड्रिप सिस्टम लगवाने का निश्चय किया। श्री फौजी ने अपने आधा हैक्टयेर भूमि पर ड्रिप सिस्टम लगवाया तथा सब्जियों की उन्नत खेती के बारे में तकनीकी जानकारी हासिल करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र चांदगोठी पर प्रशिक्षण लिया।

उत्पादन

वर्ष 2018 में फरवरी माह में श्री फौजी ने प्लास्टिक मल्च एवं ड्रिप सिस्टम का उपयोग करके आधा हेक्टयेर भूमि पर तरबूज की खेती की। कृषि वैज्ञानिकों की सलाह से उन्होंने तरबूज की विभिन्न संकर किस्मों के बीजों का चयन किया। श्री फौजी ने तरबूज की किस्म सुमन, सुगर बेबी आदि का चयन किया। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने श्री फौजी की खेती के प्रति लगन को देखकर अपना पूरा सहयोग दिया। केन्द्र के वैज्ञानिकों ने समय–समय पर श्री फौजी के खेत का निरीक्षण किया और उन्नत कृषि क्रियाओं–जैसे कीट एवं

रोग नियंत्रण, समेकित उर्वरक प्रबंधन अदि के बारे में समय–समय पर सलाह दी। चूँकि भूमि का उपजाऊपन बहुत कम था इसलिए ड्रिप के माध्यम से घुलनशील उर्वरकों का प्रयोग किया जो की अत्यधिक कारगर साबित हुआ।

लागत के बारे में पूछने पर श्री फौजी ने बताया की आधा हेक्टयेर में सब्जी इकाई लगाने के लिए लगभग 1 लाख रूपए की लागत आई जिसमें ₹ 50,000 ⁄ – का ड्रिप सिस्टम, ₹ 20,000 ⁄ – की प्लास्टिक मल्च, ₹ 20,000 ⁄ – का बीज एवं ₹10000 ⁄ – का अन्य खर्च शामिल है।

परिणाम

तरबूज की फसल तैयार होने में लगभग तीन महीने का समय लगता है। श्री फौजी के अनुसार उनके खेत में 5000 तरबूज के पौधे थे। प्रति पौधा औसतन 2 तरबूज लगते हैं तथा एक तरबूज का औसत वजन 2.5 किलोग्राम आता है इस तरह आधा हेक्टयेर भूमि पर श्री फौजी के खेत में कुल 250 क्विंटल तरबूज का उत्पादन हुआ। बाजार में तरबूज का भाव ₹ 8 से ₹12 का मिला। इस प्रकार श्री फौजी को तरबूज कि फसल से कुल ₹ 2 लाख 50 हजार की आय हुई। चूँकि एक लाख कि कुल लागत लगी थी अतः श्री फौजी को ₹ 1 लाख 50 हजार लाख का शुद्ध मुनाफा हुआ। श्री फौजी ने बताया कि अगली बार ₹ 50,000 ड्रिप तथा ₹ 20,000 की प्लास्टिक मल्च कि लागत नहीं आएगी जिससे आधा हेक्टयेर में लगभग ₹ 30,000 ⁄ – की ही लागत आएगी।

प्रभाव

इस अपार सफलता के बाद फौजी अति उत्साहित है और अगली बार एक हेक्टयेर भूमि में तरबूज के साथ अन्य सब्जियों कि खेती करने कि सोच रहे हैं। श्री फौजी ने इस सफलता का श्रेय कृषि विज्ञान केन्द्र, चूरु 2 (चाँदगोठी) के वैज्ञानिकों को दिया।

13 कृषि विज्ञान केन्द्र - चुरु द्वितीय

बागवानी से कमाया दोहरा लाभ

परिचय

बुजुर्गों ने ठीक ही कहा है कि हीरे को बिना घिसे चमकाया नहीं जा सकता और बिना परिश्रम और संघर्ष के किसी इंसान कि किस्मत को बदला नहीं जा सकता। यह वाक्य सटीक बैठता है चुरू जिले के किसान श्री केशुराम पूनिया पर जिन्होंने अपनी मेहनत के दम पर दिखा दिया की सफलता किस्मत से नहीं मेहनत से मिलती है।

श्री केशुराम पूनिया चुरू जिले की राजगढ़ तहसील के छोटे से गाँव नुहन्द के रहने वाले हैं। श्री केशुराम के पास कुल 6 हेक्टेयर खेती लायक जमीन है। श्री केशुराम प्रगतिशील किसान के रूप में जाने जाते हैं। वर्ष 2012 में नजदिकी गाँव चाँदगोठी में कृषि विज्ञान केन्द्र खुलने के बाद श्री केशुराम पूनिया केन्द्र के वैज्ञानिकों के संपर्क में आये तथा समन्वित कृषि करना आरम्भ किया। वर्ष 2014 में श्री पूनिया को कृषि विज्ञान केन्द्र, चूरु–2 (चाँदगोठी) के माध्यम से जिला स्तर पर समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने हेतु व उत्कृष्ट कार्य करने पर 'आत्मा' परियोजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार मिल चुका है।

योजना, कार्यानवयन और सहायता

जिला स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के बाद श्री केशुराम के हौसले बुलंद हुए तथा अधिक लाभ प्राप्त करने की नयी तकनीक की जानकारी के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र चाँदगोठी के वैज्ञानिकों से विचार–विमर्श किया। वैज्ञानिकों ने खेती को अधिक लाभदायी बनाने हेतु श्री पूनिया को बागवानी अपनाने कि

सलाह दी। वर्ष 2012 में ही श्री पूनिया कृषि विभाग के माध्यम से एक हेक्टेयर जमीन पर अनार का बगीचा लगा चुके थे। बगीचे के बीच में श्री पूनिया ने परंपरागत फसलों जैसे मूंग, मोठ, ग्वारपाठा आदि का उत्पादन किया जिससे विशेष लाभ नही हुआ। केन्द्र के कृषि वैज्ञानिकों ने श्री पूनिया को सब्जियाँ एवं औषधीय पौधे लगाने का सुझाव दिया। इसके बाद श्री पूनिया ने अनार के बगीचे के बीच में प्याज की फसल लगाई।

उत्पादन

श्री पूनिया ने बताया की एक हेक्टेयर में अनार के 400 पौधों (छः वर्ष के पुराने बगीचे से) से लगभग 40 क्विण्टल अनार का उत्पादन हुआ जिसे बाजार में बेचने से 2 लाख रुपये का कुल लाभ हुआ। इसके साथ ही एक हेक्टेयर में प्याज की फसल से 300 क्विन्टल प्याज का उत्पादन हुआ। प्याज को बाज़ार में बेचने पर श्री पूनिया को 8 रुपये प्रति किलो के हिसाब से 2 लाख 40 हजार रुपये का मुनाफा हुआ। श्री पूनिया ने बताया की अनार के बगीचे एवं प्याज की फसल में उन्हें 60 हजार रु. की कुल लागत आई। अतः वर्ष भर में 3 लाख 80 हजार रु. का शुद्ध लाभ हुआ।

परिणाम

कृषि वैज्ञानिकों की सलाह पर इस बार श्री पूनिया 2 हेक्टेयर जमीन पर फलदार पौधे लगाने का विचार कर रहे हैं। फल एवं सब्जियों के अलावा श्री पूनिया औषधीय पादप एलोयवीरा की खेती भी करते है जिसका बाजार भाव 2 से 3 रु प्रति किलो का मिलता है।

प्रभाव व संदेश

फलदार पौधों के बीच में खाली पड़ी जमीन में किसान भाई सब्जियों एवं औषधीय पौधों की खेती करके दोहरा लाभ कमा सकते हैं। इसके लिए कृषि विज्ञान केंद्र चाँदगोठी पर समय समय पर संस्थागत प्रशिक्षण भी दिए जाते हैं।

14 कृषि विज्ञान केन्द्र - दिल्ली

फसल विविधीकरण कर बढायें कृषि से आय

परिचय

एक समय था जब किसानों की ये धारणा थी कि खेती एक लाभदायक उद्यम नहीं हैं, लेकिन दिल्ली राज्य के उत्तरी पश्चिम दिल्ली के दरियापुर कला गांव में रहने वाले किसान ने इस धारणा को बदला है। हम बात कर है दिल्ली के उत्तर पश्चिम जिले के दरियापुर कलां में एक किसान परिवार में जन्म लेने वाले श्री सत्यवान जी की, जो उच्च माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने परिवार के साथ पारंपरिक विधि से होने वाले कृषि व्यवसाय में शामिल हो गए। इस अलीपुर ब्लॉक के दरियापुर कलां के अधिकांश किसान गेहूँ, धान, नर्सरी और दालों की खेती करके अपना जीवन निर्वाह करते है। लेकिन सत्यवान जी ने इस कृषि प्रणाली को परिवर्तित किया और अपनी जमीन पर 20 एकड़ में से 15 एकड़ भूमि पर धान व गेहूँ और बाकी 5 एकड पर सब्जी की खेती करनी शुरु की। जिससे उनको गेहूँ, धान और सब्जी की खेती से 1.5 लाख रुपये प्रति एकड़ की आमदनी प्राप्त हुई लेकिन श्री सत्यवान इस कृषि प्रणाली में से सब्जी की खेती की तरफ ज्यादा आकर्षित हुए क्योंकि उनको यह अनाज वाली फसलों की तुलना में अधिक लाभकारी लगी।

योजना, क्रियान्वयन एवं सहायता

इसी अनुभव के आधार पर श्री सत्यवान जी ने सब्जियों की खेती की तरफ ज्यादा ध्यान देने की सोची और फिर उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा से प्रशिक्षण प्राप्त करके तथा तकनीकी परामर्श द्वारा नवीनतम व लाभकारी कृषि तकनीकी, नवाचार और बहु–फसली विधियों को अपनाकर 15 एकड़ अपनी जमीन और 25 एकड़ जमीन लीज पर लेकर वर्ष 2015–16 में उन्होंने टमाटर, भिंडी, मिर्च, बैंगन, ककड़ी, लौकी, तोरी, प्याज, फूलगोभी, मटर और गाजर जैसी सब्जियों को बाजार की बढ़ती मांग के अनुसार और उच्च आमदनी वाली सब्जी फसलों को खेती से जोड़ा। उन्होंने नवाचार अपनाते हुए अपनी खेत पर 30 से अधिक उच्च पैदावार देने वाली और संकर किस्मों का प्रयोग करके अपने क्षेत्र में खेती को एक नई दिशा दे दी।

श्री सत्यवान जी बहुत मेहनती किसान हैं, नवीनतम तकनीकों एवं नवाचार को तेजी से समझने और अपनाने में अग्रणी रहते हैं। वे खेती और विपणन में पूरे दिन सक्रिय रहते है। वे अपनी उपज और अन्य किसानों की उपज की मंडियों में विपणन के दौरान मध्यस्थता करके सब्जियों की उचित कीमत दिलवाते है, ताकि अन्य किसानों को भी अपने उत्पाद की अच्छी आमदनी प्राप्त हो सके। अपने उत्पादों और अन्य किसानों के उत्पाद की कम कीमतें मिलने से होने वाले भेदभाव को देखते हुए उन्होंने अपने उत्पादन की स्वयं बिक्री के लिए

अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) के लिए आवेदन किया और 'आज़ादपुर मार्केटिंग कमेटी (एपीएमसी)' के नाम से नई संस्था बनाकर अपने कृषि व्यवसाय को एक कदम और आगे बढ़ा दिया।

दिल्ली के अलीपुर क्षेत्र में फलों और सब्जियों की खेती के लिए भरपूर सम्भावनायें है। यहाँ से बाजार से बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए सघन खेती की आवश्यकता है। यहाँ नर्सरी के दौरान अत्यधिक तापमान, अप्रत्याशित बारिश और उतार–चढ़ाव के कारण किसानों को गंभीर नुकसान होता है एवं संकर (हाइब्रिड) सब्जियों के बीज बहुत कीमती होते हैं। इसलिए प्रत्येक सब्जी उगाने वाले किसान को स्वस्थ बीज और सघन नर्सरी प्रबंधन की आवश्यकता होती है।

इस संभावना को देखते हुए वर्ष 2012 में श्री सत्यवान जी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, नई दिल्ली परियोजना से जुड़कर और अधिक आय प्राप्त करने के लिए से तकनीकी सहायता प्राप्त करके अपने क्षेत्र में अन्य सब्जी उत्पादकों के लिए पौधशाला में पौध तैयार करके किसानों को बेचना प्रारम्भ किया। सब्जी के उत्पादन को आगे बढ़ाने के लिए श्री सत्यवान जी ने पाया कि सब्जी फसलों की अधिकतम उत्पादकता और उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए पौधशाला में तैयार पौध स्वस्थ, अच्छी और बीमारी से मुक्त होनी चाहिए। इसी संदर्भ में उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र के व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम "व्यावसायिक सब्जी पौध उत्पादन" विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त करके पॉली हाउस में सब्जी पौध उत्पादन की योजना बनाई और आज वे प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में भी उच्च गुणवत्ता वाली पौध तैयार करके और अपने आस–पास के किसानों को उपलब्ध करवा कर उनकी खेती की तकनीकी परिवर्तित करके उनकी आय को बढ़ावा दे रहे है एवं अपने क्षेत्र में प्रगतिशील किसान की भूमिका निभा रह है।

उत्पादन एवं परिणाम

इस प्रशिक्षण के बाद श्री सत्यवान जी ने तीन साल की छोटी अवधि में कम लागत की एक पॉली हाउस इकाई से छह इकाई परिसर में विस्तारित कर दिया और साल भर में 11,60,000 पौध तैयार करके

दिल्ली के आस–पास दो–तीन जिलों और सोनीपत जिले की दो तहसीलों में किसानों का बेचा। जिससे उनको 8,70,000/– रुपये की अतिरिक्त सकल आय प्राप्त हुई।

श्री सत्यवान जी की उपरोक्त कृषि उद्यमों से विगत कुछ वर्षों में आय का लेखा–जोखा निम्नानुसार है–

वर्ष	कृषि उद्यम	सकल वार्षिक आय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)	लागत–लाभ अनुपात
2013–14	गेंहूँ	3,12,000	1,27,500	1:1.69
	धान	6,24,000	3,16,500	1:2.03
	रबी सब्जियाँ	3,60,000	2,10,000	1:2.40
	खरीफ सब्जियाँ	4,00,000	2,45,000	1:2.58
	योग	16,96,000	8,99,000	
2014–15	गेंहूँ	3,24,000	1,38,000	1:1.74
	धान	6,36,000	3,27,000	1:2.05
	रबी सब्जियाँ	3,52,000	2,01,000	1:2.33
	खरीफ सब्जियाँ	2,20,000	1,42,500	1:2.83
	रबी सब्जियाँ नर्सरी	1,50,000	80,000	1:2.14
	योग	16,82,000	8,88,500	
2015–16	गेंहूँ	2,25,000	1,03,000	1:1.84
	धान	10,80,000	5,60,000	1:2.07
	रबी सब्जियाँ	14,40,000	8,36,000	1:2.38
	खरीफ सब्जियाँ	6,00,000	3,67,500	1:2.58
	रबी सब्जियाँ नर्सरी	5,50,000	3,40,000	1:2.62
	खरीफ सब्जियाँ नर्सरी	1,50,000	80,000	1:2.14
	योग	40,45,000	22,86,500	
2016–17	गेंहूँ	2,92,500	1,37,500	1:1.88
	धान	11,20,000	5,95,000	1:2.13
	रबी सब्जियाँ	16,20,000	9,36,000	1:2.36
	खरीफ सब्जियाँ	8,00,000	4,90,000	1:2.58
	रबी सब्जियाँ नर्सरी	4,50,000	2,40,000	1:2.14
	खरीफ सब्जियाँ नर्सरी	4,00,000	2,20,000	1:2.22
	योग	46,82,500	26,18,500	

वर्ष	कृषि उद्यम	सकल वार्षिक आय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)	लागत–लाभ अनुपात
2017–18	गेंहूँ	4,86,000	2,30,000	1:1.89
	धान	9,68,000	3,90,500	1:1.67
	रबी सब्जियाँ	14,40,000	8,32,000	1:2.36
	खरीफ सब्जियाँ	9,20,000	5,32,500	1:2.37
	रबी सब्जियाँ नर्सरी	4,50,000	2,45,000	1:2.19
	खरीफ सब्जियाँ नर्सरी	4,20,000	2,30,000	1:2.21
	योग	46,84,000	24,60,000	

प्रभाव

इसके साथ–साथ श्री सत्यवान जी ने बाजार की मांग, रोपण मांग व आपूर्ति के अनुसार उत्पादन कर उसकी जानकारी अपने ग्राहकों के देने के लिये संचार तकनीकी, समाचार पत्र विज्ञापन, सड़क पर कार्ड और बोर्ड डिस्प्ले का प्रयोग करते हुए अपने उत्पाद के विपणन के लिए प्रचार–प्रसार करते हैं। फलस्वरुप इन्होंने आस–पास के विभिन्न गांवों में मौजूदा ग्राहकों के बीच अपने नर्सरी उत्पादों के लिये और परामर्शदाता के रूप लोकप्रियता प्राप्त की है। इस तरह अपने नर्सरी प्रतिष्ठान इकाई को बढ़ा कर अपने स्वयं के गांव से 20–25 श्रमिकों को रोजगार भी उपलब्ध करवा रहे है। श्री सत्यवान बहुत मेहनत करने वाले किसान हैं और वह

तकनीकों को तेजी से समझने और इसे अपनाने में अग्रणी रहते हैं। उन्हें सब्जियों के महत्वपूर्ण कीट और उनकी प्रबंधन की बहुत अच्छी जानकरी हैं। जिससे वे अपने आस–पास के किसानों को विशेषज्ञ की तरह जानकारी एवं मार्गदर्शन देकर नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए सक्रिय रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

संदेश

श्री सत्यवान जी जब से कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, नई दिल्ली से जुड़े तब से कृषि प्रणाली आधारित उच्च उत्पादकता और लाभ बढ़ाने वाला एक अच्छा मॉडल तैयार किया है। श्री सत्यवान जी ने कृषि के सभी घटकों को सब्जी में इस तरह शामिल किया है कि अब खेती प्रणाली उत्पादक और लाभप्रद सिद्ध हो रही है। उनका कहना है कि "यदि किसान परिवार अन्य फसलोत्पादन के साथ सब्जियों की खेती नवीनतम तकनीकों का अपनाकर करते हैं, तो वे अपने उत्पादन को बढ़ाकर और विपणन करके सालाना लाखों की आय कमा सकते हैं।

15 कृषि विज्ञान केन्द्र - फतेहाबाद

फसलावशेष प्रबंधन से घटाई लागत, बढाया लाभ और बचाया पर्यावरण

परिचय

मैं तजिंदर सिंह टूर सुपुत्र श्री हरशरण सिंह टूर, गाँव–सालमखेड़ा, तहसील व जिला फतेहाबाद का रहनेवाला हूँ। मुझे 2017 में प्रगतिशील किसान के रूप में चौधरी चरणसिंह कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में सम्मानित भी किया गया। मैं धान, कपास, ग्वार की खेती करता हूँ। मैं 25 से 30 एकड़ धान की खेती करता हूँ।

योजना, क्रियान्वयन व सहायता

जैसा कि कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहाबाद ने फसल के अवशेष न जलाने के लिए किसानों को जागरूक व प्रशिक्षित किया है, मैंने भी इस बात को गौर करते हुए यह फैसला लिया कि मैं फसल के अवशेष खेत में ही मिलाऊँगा। मेरे पास एक तूड़ी स्ट्रॉ रीपर है, मैंने उसमे थोड़ी सेटिंग बदलकर करके धान कटने के बाद बचे हुए भूसे में पहले ट्रेक्टर टोका चलवाया और उसे 2 से 3 दिन सूखने दिया और बाद में स्ट्रॉ रीपर को उसमें चला दिया। जिससे भूसे के छोटे–छोटे टुकड़े हो गये और सिर्फ दो बार हैरो (तविया) चलाने से वह अवशेष मिटटी में मिल गये।

उत्पादन, परिणाम एवं प्रभाव

फसलावशेष जलाने की बजाय उनका उपरोक्त अनुसार प्रबंधन करने से मेरे खेत में मित्र कीट, जो आग लगाने से जल जाते थे, वह भी बच गये और बचे हुए अवशेष खाद के रूप में काम आ गये। जिसके कारण जमीन में चिकनाइ आने कि वजह से पानी की बचत हुई और मुझे रासायनिक खाद का भी इस्तेमाल कम करना पड़ा। इससे गेहूँ की फसल की झाड में भी इजाफा हुआ। जमीन की जुताई करने में भी 30 प्रतिशत तक का खर्चा कम हुआ। इससे मुझे एक एकड़ में 4–7 हजार रु. तक का फायदा हुआ। मैंने औसतन गेहूँ की पैदावार 60 मन (24 क्विंटल) प्रति एकड़ यानी 60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त की है।

संदेश

अतः मेरी सभी किसान भाईयों से गुजारिश है कि वो फसल अवशेष जलाने की बजाय उसे खेत में ही मिलाएं व मृदा का जैविक कार्बन बढ़ाएं व पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाएं। टिकाऊ उत्पादन व खेती की लागत में कमी लिये फसल अवशेष प्रबंधन एक अत्यंत आवश्यक उपाय है।

16 कृषि विज्ञान केन्द्र - हनुमानगढ़-1

जैविक खेती से खुशहाली

परिचय

श्री अरविन्द कुमार पुत्र श्री प्रहलाद राय विश्नोई, वार्ड नं. 11, संगरिया, जिला– हनुमानगढ़ (राज.) के निवासी है। इनकी आयु 48 वर्ष है और इन्होंने दसवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की है। इनके पास खेती की 10 हैक्टर जमीन है एवं इन्हें खेती का 23 वर्षों का अनुभव है। ये मुख्यतः देशी कपास, मूंग, ग्वार, गेहूं, सरसों, चना आदि फसलों का उत्पादन करते है। साथ में पशुपालन भी करते है इनके पास दो देशी गाय एवं एक भैंस है।

योजना एवं कार्यान्वयन

श्री अरविन्द कुमार वर्ष 2002 से पूर्व रासायनिक खेती करते थे। पूर्व में परम्परागत रासायनिक खेती से मृदा में जीवांश स्तर में कमी, उत्पादन में अस्थिरता व खेती में मित्र कीटों की घटती संख्या के चलते श्री अरविन्द्र कुमार कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया (हनुमानगढ़ प्रथम) के सम्पर्क में आये। कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया (हनुमानगढ़ प्रथम) के वैज्ञानिकों ने इन्हें जैविक खेती की सलाह दी व जैविक खेती पर प्रशिक्षण व तकनीकी सलाह मुहैया कराई। जैविक व टिकाऊ खेती में गहन जानकारी व अन्य तकनीकी संबल प्रदान करने हेतु इन्हें जैविक खेती के क्षेत्र में कार्य कर रही विभिन्न संस्थाओं व केन्द्रों से प्रशिक्षण लेने हेतु प्रेरित किया। तत्पश्चात

श्रीमान संयुक्त निदेशक कृषि, श्रीगंगानगर से सम्मान प्राप्त करते हुये श्री अरविन्द कुमार

श्रीमान जिला कलेक्टर, हनुमानगढ़ से सम्मान प्राप्त करते हुये श्री अरविन्द कुमार

पतन्जली, हरिद्वार में योगगुरू बाबा रामदेव के साथ श्री अरविन्द कुमार

इन्होंने वर्ष 2003–04 से अपनी सम्पूर्ण 10 हैक्टर जमीन पर जैविक खेती करना प्रारम्भ किया। यद्यपि प्रारम्भ के कुछ वर्षों में इन्हें अच्छा उत्पादन नहीं मिल सका। लेकिन श्री अरविन्द कुमार ने हौंसला नहीं छोड़ा। वर्तमान में श्री अरविन्द्र कुमार अपने कृषि उत्पादों (गेहूं, सरसों, चना व मूंग) को सामान्य मूल्य से 2–2.5 गुना अधिक मूल्य पर बेच कर अच्छा लाभ ले रहे हैं।

वर्ष 2003 से 2008 तक स्वदेशी के प्रचार–प्रसार हेतु श्री राजीव दीक्षित के साथ कार्य किया। इस दौरान श्री दीक्षित ने प्रति वर्ष एक माह संगरिया में इनके निवास 5 एनटीडब्ल्यू, में प्रवास किया। इन्होंने प्राकृतिक खेती के प्रणेता श्री सुभाष पालेकर जी के साथ भी समन्वय बनाये रखा। जैविक खेती में उत्कृष्ट कामों के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र की अनुसंशा पर वर्ष 2007, 2009 व 2013 में उपखण्ड स्तर पर, जिला स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। भारतीय किसान संघ, राजस्थान प्रदेश, जोधपुर द्वारा 24.09.2004 को जैविक एवं गौ आधारित कृषि अपनाने पर अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया।

तकनीकी विवरण

श्री अरविन्द कुमार द्वारा जैविक आधारित उत्पादों के विनिर्माण एवं मृदा संवर्धन हेतु निम्न कार्य किये जा रहे हैं।

- जैव खादों व जैव कीटनाशियों का स्वयं निर्माण एवं उपयोग।
- फसल अवशेष प्रबन्धन।
- जैव नियंत्रण हेतु पक्षियों को आकर्षित करने हेतु चुग्गा का उपयोग।

तत्कालीन निदेशक प्रसार शिक्षा, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर डॉ. ए. के. पुरोहित द्वारा श्री अरविन्द कुमार के खेतों का भ्रमण

सोम कम्पनी के पदाधिकारियों द्वारा श्री अरविन्द कुमार के खेतों का भ्रमण

- पक्षियों को आकर्षित करने हेतु उनके खाने योग्य फसलों की पंक्ति निकालना। (जैसे ग्वार में बाजरा की पंक्तियां)
- नत्रजन स्थिरीकरण को बढ़ावा देने के लिये दलहनी फसलों का समावेश।
- फसल सुरक्षा हेतु जीवामृत, घन जीवामृत व वीजामृत का उपयोग।
- फसल चक्र व सप्तधान यथा ढ़ैंचा, मूँग, ग्वार, मोठ, तिल, बाजरा व काचर, हरी खाद का उपयोग।

सहायता व तकनीकी सम्बल

कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया से श्री अरविन्द कुमार निरन्तर प्रशिक्षण व तकनीकी सलाह लेते रहते है। अन्य संस्थानों यथा– उद्यमिता विकास केन्द्र, भोपाल, विश्वभारती किसान जागृति शिक्षण संस्थान, लाडवा व गुरुकूल कुरुक्षेत्र आदि से भी प्रशिक्षण लिया। जैविक खेती के जानकार एवं पुरोधा श्री सुभाष पालेकर व श्री राजीव दीक्षित से समन्वय बनाये रखा।

परिणाम

श्री अरविन्द कुमार वर्तमान में जैविक विधियों को अपनाकर विभिन्न फसलों का 10.0 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर उत्पादन ले रहे है और वर्तमान में उनकी खेती से उत्पादन लागत एवं आय का लेखा निम्नानुसार है–

उत्पादन लागत (रु. लाख)	सकल आय (रु. लाख)	शुद्ध आय (रु. लाख)	लाभ लागत अनुपात
4.80	17.35	12.55	3.61

प्रभाव

जैविक खेती अपनाने से पर्यावरण व मृदा संरक्षण के साथ–साथ भूमि में सूक्ष्म जीवों की संख्या व जीवांश पदार्थ की मात्रा में आशातीत सुधार हुआ है। जिससे कृषि उत्पादन में स्थायित्व आया है तथा मानव व पशु स्वास्थ्य में सुधार देखने को मिल रहा है।

जैविक खेती के बारे में जागृति लाने के प्रयास में क्षेत्र के जैविक किसानों के प्रतिनिधि मण्डल में शामिल होकर योग गुरु बाबा रामदेव से हरिद्वार में मुलाकात की। इनके इस प्रयास से प्रभावित होकर क्षेत्र के 30 किसानों ने स्वयं उपभोग के लिये जैविक खेती करना प्रारम्भ किया है।

संदेश

श्री अरविन्द कुमार के अनुसार टिकाऊ खेती के सन्दर्भ में जैविक खेती को नवविकसित तकनीकी के रुप में माना जा रहा है। प्राकृतिक संतुलन बनाये रखते हुये भूमि, जल व वायु को प्रदूषित किये बिना फसलों के दीर्घकालीन व स्थिर उत्पादन को सुनिश्चित करना ही जैविक खेती का उद्देश्य है।

17 कृषि विज्ञान केन्द्र - हनुमानगढ़ 1

मधुमक्खी पालन–आय एवं स्वरोजगार का सशक्त माध्यम

परिचय

श्री जगदीश भाम्भू पुत्र श्री नत्थु राम गाँव – नगराना, तहसील – संगरिया, जिला– हनुमानगढ़ (राज.) के निवासी है। इनकी उम्र 45 वर्ष है और इन्होंने दसवीं तक शिक्षा प्राप्त की है।

योजना व क्रियान्वयन

श्री जगदीश भाम्भू के पास खेती के लिए 1.5 हैक्टेयर भूमि है, जिसमें परम्परागत खेती करते हैं। यह खेती के साथ–साथ पशुपालन भी करते है और इनके पास चार गाय हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण इन्होंने आय बढाने के लिये मधुमक्खी पालन को सहायक व्यवसाय के रुप में चुना तथा वर्ष 2015 में ये कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया, जिला – हनुमानगढ़ (राज.) के सम्पर्क में आये और दिनांक 17–20 नवम्बर 2015 तक चार दिवसीय मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण लेकर इस व्यवसाय से जुड़े।

उत्पादन

वर्ष 2015 में श्री भाम्भू ने पाँच फ्रेम के 50 पेटियां (बॉक्स) से मधुमक्खी पालन का कार्य आरम्भ किया। प्रथम वर्ष इन्होंने 16.70 क्विंटल शहद पैदा कर 1.20 लाख रुपये की शुद्ध आय प्राप्त की। मधुमक्खी पालन से इनकी फसलों में परागण की क्रिया ज्यादा बेहतर हुई जिससे फसल उत्पादन में 10–15 प्रतिशत की वृद्धि हुई, ऐसा श्री भाम्भू का मानना है।

श्री जगदीश भाम्भू की मधुमक्खी पालन इकाई का दृश्य

सहायता

मधुमक्खी पालन की तकनीकी जानकारी कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त की। इसमें सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक जानकारी

छत्ते से शहद निकालते हुये
श्री जगदीश भाम्भू

गाँव फतेहगढ़ में आयोजित किसान मेले में
स्टाल प्रदर्शनी में श्री जगदीश भाम्भू

के साथ–साथ मधुमक्खी पालकों की युनिट का भ्रमण भी कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा करवाया गया। इनके द्वारा राज्य सरकार से कोई अनुदान नहीं लिया गया।

परिणाम एवं प्रभाव

वर्तमान में श्री जगदीश भाम्भू के पास 328 मधुमक्खी बॉक्स हैं। इस वर्ष 2018 में इनका वार्षिक शहद उत्पादन 105.60 क्विंटल रहा। इससे इन्हें 4.85 लाख रुपये की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त हुई। इस व्यवसाय में श्री भाम्भू ने 4 युवाओं को रोजगार से जोड़ा तथा स्वंय राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड, नई दिल्ली से वर्ष 2017–18 में पंजीकृत हो चुके हैं।

संदेश

श्री भाम्भू मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में रॉल मोडल के रुप में कार्य कर रहे हैं तथा जिले के दूसरे युवाओं को इस कार्य के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

18 कृषि विज्ञान केन्द्र - हनुमानगढ़ 2

कड़ी मेहनत और लगन से खारे ग्वारपाठे (एलोविरा) से जीवन में मिठास

परिचय

कड़ी मेहनत और लगन से खारे–खारे ग्वारपाठे में जीवन का मिठास ढूंढा गाँव–परलीका, जिला–हनुमानगढ के युवा प्रगतिशील किसान अजय स्वामी ने। जब होश संभाला तो सिर से पिता का साया उठ गया। घर की खस्ता हालत ने विद्यालय के रास्तों को संघर्ष की राह की ओर मोड़ दिया। अजय का कुलांचे भरता बचपन घर की जिम्मेदारी की भेंट चढ गया। मगर अजय अपनी मुसीबतों के आगे घुटने टेकने की बजाय पुरजोर आत्मविश्वास के साथ अपने पथ पर बढता गया। मामा के पास चाय का ढाबा संभालते हुए मन में एक बात और पक्की हो गई कि कुछ ऐसा काम करूंगा जिससे सेवा भी हो और जीवनयापन भी। आज डेढ दशक की कड़ी मेहनत और लगन का ही परिणाम है कि नेचुरल हेल्थ केयर संस्था के प्रधान अजय स्वामी ग्वारपाठे का रस (एलोवेरा जूस) व अन्य प्रोडक्ट से हनुमानगढ जिले के चमकते सितारे बन गए है।

हनुमानगढ जिले की नोहर तहसील के साहित्यिक गांव के नाम से विख्यात परलीका में जन्में अजय स्वामी किसी कहानीकार या गीतकार से कम नहीं आंके जा सकते। 28 वर्षीय अजय भले ही आठवीं तक ही पढाई कर पाए मगर उनका ग्वारपाठे के रस उत्पादन की संघर्ष भरी कहानी शोध का विषय हो सकती है। बातचीत में अजय ने बताया मेरे मन में बचपन से ही कुछ हटकर व चुनौतीपूर्ण करने की ललक थी। इस दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आया एवं मुझे वहां से औषधीय फसलों की खेती व उनके प्रसंस्करण की प्रेरणा व जानकारी प्राप्त हुई, वहीं से ग्वारपाठे की खेती व रस बनाने की भी प्रेरणा मिली।

योजना, कार्यान्वयन और सहायता

अजय ने परम्परागत खेती से होने वाली आमदनी की परवाह न करते हुए भादरा तहसील के मुन्सरी गांव में अपने मामा के यहां दो बीघा में ग्वारपाठे की खेती की। फसल तैयार होने में तीन बरस लग गए। सभी लोगों ने अजय का हौसला कमजोर किया कि तीन साल में छः फसलें हो जाती, ग्वारपाठे में ऐसा क्या मिलेगा?मगर अजय का इरादा अटल रहा। इसी दौरान अजय में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से इस सम्बन्ध में बात की। लोग जिस बात को लेकर हतोत्साहित करते थे कृषि से जुड़े इन लोगों ने अजय की पीठ थपथपाई। अजय को संबल मिला और वह इस दौरान कई राज्यस्तरीय, जिलास्तरीय कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रमों

में भाग लेने लगा व भ्रमण करने लगा। खेती पकने पर अजय के सामने एक नई चुनौती मुंह बाएं खड़ी थी कि अपनी फसल को किस मंडी में लेकर जावे। पंजाब, राजस्थान और उतरप्रदेश की कई दवा कंपनियों व अन्य संस्थाओं से संपर्क व भ्रमण के बाद अजय को निराशा ही हाथ लगी। मगर वह निराश नहीं हुआ। घूमते–घूमते अजय को लगा कि क्यों ना खुद ग्वारपाठे का रस तैयार करू? विचार जब धरातल पर उतरा तो घरेलू मिक्सी से अजय ने कड़ी मेहनत करते हुए हजारों लीटर एलोवेरा ज्यूस बना डाला। ज्यूस बन गया पर खरीदे कौन? और बेचे कौन? फिर एक नई चुनौती, अजय ने अपने आस–पड़ोस, गली मौहल्ले से यह काम भी शुरू किया। फिर तो गांव–गांव और शहर–शहर भी शुरू हो गए। ग्वारपाठे का करीब 300 प्रजातियों में सबसे ज्यादा स्वास्थ्यवर्धक व गुणवत्ता की दृष्टि से उत्तम बारमंडीसिस की खेती अब इसको एक युवा प्रगतिशील कास्तकार के रूप में पहचान दिला चुकी थी।

उत्पादन

आज यह युवा दो बीघा ग्वारपाठे से शुरू की गई खेती को राजस्थान के कई स्थानों पर कई मरबा में करवाता है। वहीं घरेलू मिक्सी से शुरू हुई यात्रा स्टील की बड़ी मशीन तक पहुंच गई है। आज लगभग 30 कंपनियों को माल तैयार करके सप्लाई करते हैं और इनके प्रोडक्ट की मांग इतनी बढ गई है कि कंपनियां खुद आकर पूछने लगी है कि नया माल कब बना रहे हो।

अजय के उत्पाद में एलोवेरा ज्यूस, आंवला ज्यूस, त्रिफला ज्यूस, गिलोय ज्यूस, करेला ज्यूस, एलोवेरा साबुन, एलोवेरा क्रीम, एलोवेरा शैंपू, शिकाकाई शैंपू, हेयर पाउडर, एलोवेरा, एलोवेरा स्किन जैल, साबुन, दद्र निवारक तेल, आंवला कैंडी, आदि कई उत्पाद के साथ–साथ देशी फोफलिया, सांगरी आदि सब्जियां, आचार व बड़ी–पापड़ आदि विभिन्न खाद्य उत्पादों का भी उत्पादन कर रहे हैं। गौरतलब है कि बारमंडीसिस किस्म के एलोवेरा का ज्यूस अमेरिका में तेरह सौ रूपए प्रति लीटर के हिसाब से बिकता है वहीं भारत में अजय मात्र रू. 200 में उससे अच्छी गुणवत्ता के साथ लोगों को दे रहे है। इस प्रकार कृषि क्षेत्र में नए प्रयोग कर अजय ने मिसाल कायम की है।

परिणाम

दो बीघा कृषि भूमि से शुरूआत करने वाले अजय बताते हैं कि आज वे 50 बीघा जमीन पर एलोवेरा का उत्पादन कर रहे हैं तथा प्रति एकड़ लगभग पचास से अस्सी हजार रूपए प्रति वर्ष आमदनी होती है, इसके साथ– साथ अलग–अलग हर्बल जड़ी–बुटियों के द्वारा एलोवेरा के साथ प्रयोग कर नए उत्पाद तैयार कर मार्केटिंग करते हैं जिससे शत–प्रतिशत प्राकृतिक दवा तैयार की जाती है। 'राजस्थान रो हर्बल उत्पाद' नाम से पंजीकृत संस्था के माध्यम से अजय एलोवेरा के साथ–साथ राजस्थान की विभिन्न जड़ी–बुटियों का प्रयोग करके बहुत से उत्पाद तैयार कर रहे हैं व थोड़े समय में ही लगभग 45 से ज्यादा उपयोगी व आकर्षक उत्पाद तैयार कर चुके है। प्राकृतिक व रसायन मुक्त होने के कारण इनके उत्पाद मार्केट में काफी चर्चा में है साथ ही इनके उत्पादों की मांग भी दिन–प्रतिदिन बढती जा रही है।

प्रभाव

विभिन्न मेलों के दौरान इनके उत्पादों की स्टाल जिला व राज्य स्तर पर काफी बार प्रथम स्थान पर रह चुकी है तथा इनके उत्कृष्ट कार्य के लिए दो बार जिला कलेक्टर, हनुमानगढ तथा राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति भी इन्हें सम्मानित कर चुके है।

संदेश

इस तरह श्री अजय अपनी मेहनत व लगन से खेती से अच्छी आय ही नहीं ले रहे है बल्कि जिले व राज्य भर के किसानों के लिये एक प्रेरणा बन कर खेती से रोजगार व आमदनी बढाने की नई राह दिखा रहे है।

19 कृषि विज्ञान केन्द्र - हिसार (सादुलपुर)

जैविक खेती से सफल उद्यमिता

परिचय

श्रीमती विद्या देवी पत्नि श्री राजेंद्र सिंह, गाँव–रामायण, जिला–हिसार, हरियाणा की निवासी है। इनकी उम्र 30 साल है और ये एक युवा महिला किसान हैं। इन्होंने कला स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की है। इनके पास खेती की 13 एकड़ जमीन है जिस पर यह गेंहूँ, धान, चना, गन्ना आदि फसलों का उत्पादन करती है। इन्होंने एक छोटी सी डेयरी इकाई भी बना रखी है जिसमें नौ गायें व दो भैंसे पाल रखी है। वह जैविक खेती के साथ पारंपरिक फसलों की खेती कर रही है। उसने अपने खेत को जैविक खेत के रूप में विकसित किया है।

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

श्रीमति विद्या देवी 2010 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हिसार (सादलपुर) विशेषज्ञों के संपर्क में आई, जब केन्द्र के वैज्ञानिक अपने गांव में जैविक खेती पर प्रशिक्षण आयोजित कर रहे थे। वह उस प्रशिक्षण से इतनी प्रभावित हुई कि उसने जैविक खेती के बारे में अपने पति से बात की लेकिन जैविक उपज की कम पैदावार के कारण उनके पति को इसकी सफलता में संदेह था। लेकिन उन्होंने अपने पति को आश्वस्त किया और 13 एकड़ जमीन में से चार एकड़ में जैविक खेती शुरू की।

उत्पादन

श्रीमति विद्यादेवी ने जैविक खेती पद्धति से गेहूँ, धान, चना, गन्ना आदि फसलों की खेती शुरू वर्ष 2011–12 से की। वे इन फसलों को पैदा करने के लिए वर्मी कम्पोस्ट खाद के अलावा अन्य और कोई कीटनाशक, खरपतवारनाशी और अन्य रसायनों का उपयोग नहीं कर रही हैं।

वर्मी कम्पोस्ट की ज्यादा मात्रा की आवश्यकता के लिए उन्होंने फिर से केन्द्र के वैज्ञानिकों से संपर्क किया और वर्मी कंपोस्ट तैयार करने का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। और तब उन्होंने लाडवा गोशाला की मदद से अपने खेत में एक वर्मी कंपोस्ट इकाई शुरू की। वर्मी कंपोस्टिंग के लिए अधिक मात्रा में गोबर की आवश्यकता थी, इस बात को ध्यान में रखते हुए इन्होंने 9 गायों और 2 भैंसों को खरीदकर अपनी डेयरी शुरू की। वह अपनी डेयरी का उत्पादित दूध नहीं बेचती है बल्कि वह घी तैयार करके बेचती है जिससे उनको ज्यादा लाभ होता है।

परिणाम व प्रभाव

वह कभी भी अपने खेतों की फसलों में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं करती है और वह गैर–जैविक कृषि उपज की तुलना में अपनी कृषि उपज को दोहरी दरों पर बेचती है। उनकी खेती का वर्ष 2017–18 का आर्थिक ब्यौरा निम्नानुसार है–

जैविक खेती और गैर जैविक खेती के घटक	व्यय (रुपये)	सकल आय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)
धान	15,000	85,000	70,000
गेहूँ	20,000	80,000	60,000
दलहन	6,000	16,000	10,000
चना	10,000	45,000	35,000
पशु	60,000	86,000	26,000
गन्ना	22,400	1,02,400	80,000
मेथी	5,000	18,000	13,000
गैर जैविक फसलें (धान, गेहूँ, दालें आदि)	2,50,000	6,58,000	4,08,000
योग	**3,88,400**	**10,90,400**	**7,02,000**

संदेश

श्रीमति विद्यादेवी अब जैविक खेती की एक सफल उद्यमी है। वह केन्द्र के वैज्ञानिकों को जैविक खेती के लिए उसे प्रशिक्षण द्वारा निष्णात करने, प्रोत्साहित व मार्गदर्शन करने के लिए धन्यवाद देती है। वह कहती है कि कृषि में अंधाधुंध रसायन प्रयोग से बढ रहे जहरीले जानलेवा प्रदूषण से मानव जीवन को होने वाली हानि को हमें रोकना ही होगा और उसका एक ही उपाय है 'जैविक खेती'।

20 कृषि विज्ञान केन्द्र - झुन्झुनूं

डेयरी फार्म ने बदली राजपाल की तकदीर

परिचय

श्री राजपाल सिंह पुत्र श्री भागीरथ मल, ग्राम–ढ़ेंवा का बास, पोस्ट–शिशियां, तहसील एवं जिला–झुन्झुनूं (राजस्थान)–333001 के निवासी है। ये दसवीं तक शिक्षित हैं, इनकी उम्र 48 वर्ष हैं। घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण आगे की पढ़ाई नहीं कर सके। रोजगार हेतु कई बार सेना की भर्ती में भाग लिया, लेकिन चयन नहीं हुआ। अतः अपनी पैतृक भूमि में कृषि कार्य करने लगे। श्री राजपाल के हिस्से में 4.0 हेक्टेयर कृषि भूमि आई। श्री राजपाल के पांच सदस्यों के परिवार का भरण–पोषण तथा अन्य सामाजिक खर्चों की भरपाई फसल उत्पादन से नहीं हो रही थी। अतः उसने खेती में ही कुछ नया करने की सोची ताकि उसे अतिरिक्त आमदनी मिले तथा घर भी नहीं छोड़ना पड़े। वर्तमान में उसके पास निम्न संसाधन उपलब्ध हैं– कृषि भूमि : 4.0 हेक्टेयर (2.0 हेक्टेयर सिंचित, 2.0 हेक्टेयर असिंचित), सिंचाई स्रोत : नलकूप, गायः 31 हॉलस्टीन व जर्सी संकर नस्ल, बछड़ीः 17 एवं देशी मुर्गी : 85 पक्षी। श्री राजपाल निम्नानुसार फसल एवं चारे का उत्पादन कर रहे है–

मौसम	प्रमुख फसलें	क्षेत्रफल (हे.)
खरीफ	हरा चारा–बाजरा / ज्वार चरी	0.7
	बाजरा, मूंग व ग्वार	2.8
रबी	हरा चारा–जई व रिजका	0.8
	गेंहूँ व जौ	1.1
जायद	हरा चारा–बाजरा / ज्वार चरी	0.9

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

राजपाल ने कृषि विज्ञान केन्द्र, आबूसर–झुन्झुनूं पर विभिन्न लघु एवं दीर्घ अवधि के प्रशिक्षणों में भाग लिया। प्रशिक्षण में बतायी गयी नयी तकनीकी से प्रेरित होकर डेयरी फार्म शुरू करने की सोची। उन्होंने शुरूआत वर्ष 2011–12 में तीन दुधारू गायों से की तथा दूध दूधिये को बेचते थे। उनके पास दूध बेचकर जो भी पैसा बचता था, उससे वे गाय खरीद लेते थे। इस प्रकार दो वर्ष में राजपाल के पास 10 गाये हो गई, लेकिन

उन्नत नस्ल (हॉलस्टीन व जर्सी संकर नस्ल) की गायें तथा देशी मुर्गियां

उन्हें दूधिया सही भाव व समय पर भुगतान नहीं करता था तथा कई बार पैसे का भुगतान नहीं करता था। राजपाल ने अपनी समस्या केन्द्र के वैज्ञानिकों को बतायी तथा कहा कि आपके द्वारा बतायी गयी सभी तकनीके जैसे– संतुलित खिलायी–पिलायी, वर्ष भर हरा चारा खिलाना, समय पर टीकाकरण, उन्नत नस्ल से समय पर कृत्रिम गर्भाधान, स्वच्छ व हवादार पशुशाला, खनिज लवण, कृमिनाशक दवा देना आदि तकनीकी काम में ले रहा हूँ व लाभ भी मिल रहा है, लेकिन मेहनत के अनुरूप नहीं मिल रहा।

वैज्ञानिकों ने उसे अच्छी डेयरी की सदस्यता लेकर उसका संग्रहण केन्द्र घर पर ही खोलने की सलाह दी। राजपाल को यह बात अच्छी लगी तथा उन्होंने क्षेत्र की डेयरियों से सम्पर्क कर एक प्राइवेट डेयरी का संग्रहण केन्द्र ले लिया। अब उसे अपने दूध का सही मूल्य व समय पर भुगतान मिलने लगा। वह गाँव के अन्य पशुपालकों का भी दूध लेकर डेयरी को देने लगे।

उत्पादन

शुरूआत में वह डेयरी को 90 लीटर दूध प्रतिदिन देने लगे। इस प्रकार उनके दूध बेचने की समस्या खत्म हुई। गायों की संख्या बढ़ने से पशुशाला में चिंचड़ (जईयां) की समस्या बढ़ गयी। पशुशाला का क्षेत्रफल अधिक होने के कारण दवाइयों से जईयां का निदान नहीं हो पा रहा था। अतः उन्होंने केन्द्र के वैज्ञानिकों के सुझाव से दो वर्ष पूर्व देशी मुर्गियां रखना शुरू किया। शुरूआत में 10 मुर्गियां व एक मुर्गा अपने रिश्तेदार से लाये। वर्तमान में उनके पास 85 देशी मुर्गियां है तथा समय–समय पर मुर्गा व अण्डा बेचता रहते है। मुर्गा प्रति नग ₹ 500 से 700 तथा देशी अण्डा ₹ 20–25 रुपये में बिक जाता है। धीरे–धीरे श्री राजपाल प्रतिदिन 200 लीटर दूध का उत्पादन करने लगे और प्राइवेट डेयरी में बेचते रहे।

चार माह पूर्व उन्होंने सोचा कि क्यों न बाजार में अपनी दुकान खोलकर दूध, दही, छाछ बेचा जाये। अब उन्होंने मई, 2018 में 'ढ़ेवा डेयरी फार्म' के नाम से झुन्झुनूं शहर में दुकान खोली है, जहां उन्हें प्राइवेट डेयरी से अच्छा भाव मिल रहा है। राजपाल जी ने डेयरी की आमदनी के बल पर सात वर्ष में खेती के लिए एक ट्रेक्टर, जीप,

लोडर व दो मोटर साईकिल खरीद लिये है। राजपाल जी प्रतिदिन 200 लीटर दूध बेचकर ₹ 6,500 कमा रहे है। इस कार्य में उसकी पत्नी के अलावा बच्चे सहयोग करते हैं तथा दो व्यक्तियों को रोजगार दे रखा है।

परिणाम व प्रभाव

- दूध उत्पादन से राजपाल को प्रतिदिन आय हो रही है तथा खाली समय का सदुपयोग हो रहा है।
- खेत में लगातार गोबर की खाद डालने से उर्वरा शक्ति बढ़ी है तथा उसके खेत पर फसल का उत्पादन गांव के अन्य किसानों से अधिक होती है।
- खेती व पशुपालन एक–दूसरे के पूरक होने के कारण राजपाल के पास उपलब्ध सभी संसाधनों का उपयोग हो रहा है।
- डेयरी व्यवसाय से राजपाल की शुद्ध आमदनी प्रतिवर्ष लगभग रुपये 8 लाख होती है, जिससे उनके सामाजिक व आर्थिक स्तर में सुधार हुआ है। उसके दोनों बच्चे अच्छे संस्थान में पढ़ रहे हैं।

संदेश

श्री राजपाल वर्तमान में फसल उत्पादन से घट रही आमदनी में कृषकों तथा युवाओं के लिए पशु पालन आधारित खेती से अधिक आमदनी प्राप्त करने का प्रेरणा स्रोत है।

ढ़ेवा डेयरी फार्म, ढ़ेंवा का बास

दुकान- ढ़ेवा डेयरी फार्म, झुन्झुनूं

21 कृषि विज्ञान केन्द्र - झुन्झुनूं

रामनिवास को रास आई जैविक खेती

परिचय

श्री रामनिवास पुत्र श्री रामदेवा राम, ग्राम : धायलों का बास, कारी, तहसील : नवलगढ़, जिला–झुन्झुनूं (राजस्थान) निवासी है। श्री रामनिवास की आयु 39 वर्ष है तथा वह दसवीं तक शिक्षित है। इनके पास खेती के लिये1.90 हेक्टेयर जमीन है। इस पर रामनिवास शुरु में पारंपरिक आधुनिक खेती कर रहे थे लेकिन कृषि विज्ञान केन्द्र के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों भाग लेते–लेते इनका रूझान जैविक खेती की तरफ होने लगा। इसी क्रम में इन्होंने अपने खेत पर विभिन्न जैविक खेती की इकाईयाँ स्थापित करनी शुरु की और फिर सभी फसलों का उत्पादन जैविक खेती से करने लगे। वर्तमान में इनके पास उपलब्ध संसाधनों व उत्पादित की जाने वाली फसलों का विवरण निम्नानुसार है–

जैविक विधि से ली जाने वाली प्रमुख फसलें व क्षेत्रफल

मौसम	प्रमुख फसलें	क्षेत्रफल (हे.)	अन्तराशस्य बागवानी फसलें
खरीफ	बाजरा, मूंग, मिर्च व बैंगन	1.5	बील, अनार, किन्नू, चिकू व आम
रबी	गेहूँ, चना, प्याज, मूली व गाजर	1.5	

पशुधन : गाय, भैंस व बकरी

सिंचाई स्त्रोत : सोलर पम्प चालित नलकूप (ट्यूब वैल) आदि

स्वयं के खेत पर जैविक आधारित उत्पाद इकाईयां :

1. वर्मी कम्पोस्ट इकाई
2. हर्बल कम्पोस्ट इकाई
3. गोबर गैस स्लरी इकाई
4. नेडेप कम्पोस्ट इकाई
5. बायो पेस्टीसाईड इकाई
6. जीवामृत
7. बीजामृत
8. वर्मी वाश इकाई
9. अजोला उत्पादन इकाई
10. जैविक चारा उत्पादन

अजोला उत्पादन इकाई

उप खण्ड स्तर पर जैविक खेती प्रशस्ति पत्र

योजना, क्रियान्वयन और सहायता

श्री रामनिवास जी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, आबूसर–झुन्झुनूं पर विभिन्न लघु व दीर्घ अवधि प्रशिक्षण प्राप्त कर सीखी गई नयी विधाओं से प्रेरित होकर परम्परागत फसलों के साथ–साथ अन्तराशस्य बागवानी फसलों, सब्जियों व जैविक दूध का उत्पादन शुरु किया। राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत सोलर पम्प से बूंद–बूंद सिंचाई प्रणाली की स्थापना, बील, अनार, किन्नू, चिकू व आम का पौधारोपण तथा प्याज भण्डारण इकाई की स्थापना आदि नवाचार पड़ौसी कृषकों के लिए प्रेरणा स्रोत है। सभी फसलों में गोबर गैस संयत्र से निकलने वाली स्लरी व उपरोक्त विभिन्न जैविक खादों का प्रयोग तथा खड़ी फसलों में वर्मी वाश का पर्णीय छिड़काव करते हैं जिससे जैविक खेती के उत्पादन व गुणवत्ता में स्थायित्व आया है। जैविक दूध उत्पादन हेतु अपने खेत में जैविक खेती से पैदा होने वाला हरा चारा, दाना व अजोला ही पशुओं को खिलाते हैं। इनके द्वारा उत्पादित जैविक अनाज, सब्जी, फल व दूध की क्षेत्र में बहुत अधिक मांग तथा विश्वसनीयता होने से उपरोक्त सभी उत्पाद प्रचलित बाजार मूल्य से 2 से 3 गुना दर पर हाथों–हाथ इनके खेत पर ही बिक जाते हैं।

जैविक किन्नू उत्पादन

गोबर गैस संयत्र

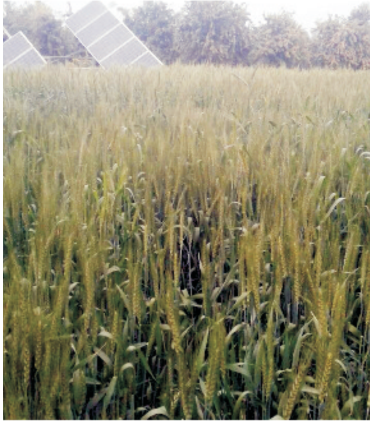

सोलर पम्प इकाई

जैविक सब्जी उत्पादन

परिणाम व प्रभाव

- रामनिवास जैविक खेती में रूची रखने वाले क्षेत्र के कृषकों तथा युवाओं के लिए आज प्रेरणा स्रोत व मार्गदर्शक बने हुए हैं तथा इस क्षेत्र में कार्य कर रही विभिन्न संस्थाओं के साथ जुड़कर जैविक खेती के प्रचार–प्रसार का कार्य कर रहे हैं।
- जैविक उत्पाद स्वास्थ्य के लिए अच्छा होने से जैविक फसल, फल, सब्जी, दूध उत्पादन, उन्नत पशुधन, गोबर गैस संयत्र, अजोला उत्पादन इकाई, सोलर पम्प से बूंद–बूंद सिंचाई प्रणाली, प्याज भण्डारण एवं अन्य विकसित नवीनतम तकनीकों को देखकर क्षेत्र के किसान इन्हें अपनाने हेतु प्रेरित हो रहे हैं।
- इनके द्वारा उत्पादित जैविक गेहूँ ₹ 30–40 प्रति किलो, चना व मूंग ₹ 100–150 प्रति किलो, बाजरा ₹ 25–30 प्रति किलो, दूध ₹ 50–60 प्रति लीटर तथा फल व सब्जी प्रचलित बाजार मूल्य से 2 से 3 गुना दर पर बिकती हैं।

आत्मा योजनान्तर्गत पंचायत समिति स्तर पर प्रथम पुरस्कार

वर्मी कम्पोस्ट इकाई

- जैविक खेती से रामनिवास जी को 1.5 हे. क्षेत्र से वार्षिक आधार पर ₹ 5 से 6 लाख की आमदनी होती है जिससे उनके सामाजिक व आर्थिक स्तर में सुधार होने के साथ–साथ आज वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला रहे हैं।
- उपरोक्त कार्यों से प्रभावित होकर इन्हें आत्मा योजनान्तर्गत पंचायत समिति स्तर पर प्रथम पुरस्कार, उप खण्ड स्तर पर जैविक खेती कृषक प्रशस्ति पत्र सहित अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है।

संदेश

श्री रामनिवास अपने नवाचारों के साथ जैविक खेती कर अपनी आय को बढाने का जीता–जागता उदाहरण अपने क्षेत्र में बने हुए है और इससे अन्य किसानों को भी इस दिशा में बढने की प्रेरणा मिल रही है। इनका सपना 'जैविक ग्राम से जैविक राजस्थान' बनाना है।

22 कृषि विज्ञान केन्द्र - करौली

समन्वित कृषि से मुरारीलाल ने अर्जित की अधिक आय और सामाजिक प्रतिष्ठा

परिचय

श्री मुरारीलाल गुर्जर गाँव–निसूरा, तहसील–नादौती, जिला–करौली के निवासी है। ये सेना से सेवानिवृत है और मध्यमवर्गीय किसान हैं। इनके पास स्वयं की 5 हैक्टेयर खेती योग्य जमीन है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण सेना से सेवानिवृति के बाद अपने पिता के साथ खेती करने लगे। इनके पास खेती योग्य पर्याप्त भूमि और सिंचाई जल की सुविधा होते हुए भी खेती की नवीन तकनिकियों की जानकारी न होने के कारण वे अधिक लाभ नही कमा पा रहे थे। पूरे परिवार द्वारा स्थानीय पारंपरिक तरीकों को अपनाकर खेती करने के कारण परिवार अपनी आर्थिक जरूरतों को भी पूरा नही कर पा रहा था। वे खरीफ में ज्वार, बाजरा, ग्वार एवं तिल तथा रबी में गेहूँ, जौ, चना, आदि फसल करने तक ही सीमित थे। उनके पास 2 देशी स्थानीय नस्ल की गायें भी थी जो कि बहुत कम दूध देती थी। परन्तु कौशल के अभाव में वे इससे ज्यादा लाभ नही ले पा रहे थे। इस कारण वे इस क्षेत्र में प्रशिक्षण लेने के लिए संस्थानों की खोज करनें लगे जिससे की वे अच्छी आय प्राप्त कर सके।

श्री मुरारीलाल के खेत पर कृषिवानिकी इकाई में लगे अरडू के पेड़

डेयरी इकाई में गिर नस्ल के स्वस्थ पशु

डेयरी इकाई में पशु आवास का दृश्य

योजना, कार्यान्वयन एवं सहायता

वर्ष 2013 में श्री मुरारीलाल जी कृषि विज्ञान केन्द्र, करौली पर वैज्ञानिकों के साथ सामान्य जानकारी प्राप्त करने हेतु आये और उसके बाद उनके जेहन में खेती को आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से करने के बारे में विचार किया। उन्होंने फिर यहां पर पशुपालन, कृषि वानिकी, और समन्वित कृषि प्रणाली से सम्बन्धित विभिन्न संस्थागत प्रशिक्षणों, प्रक्षेत्र दिवसों, किसान मेलों एवं प्रक्षेत्र भ्रमणों में भाग लिया। कृषि विज्ञान केन्द्र, करौली के वैज्ञानिकों की तकनीकी सलाह व परामर्श के माध्यम से फसलों, पशुपालन, कृषि वानिकी आदि की उन्नत वैज्ञानिक विधियों में इनकी रूचि उत्तरोतर बढती ही गई। इन्होंने अपने खेत पर वर्मी कम्पोस्ट व अजौला ईकाई की स्थापना के साथ मूंग, तिल, सरसों के प्रथम पंक्ति प्रदर्शन भी आयोजित किये। वे कृषि विज्ञान केन्द्र के नियमित सम्पर्क में रहनें लगे।

उत्पादन

श्री मुरारीलाल ने सन् 2013 में 10 बीघा जमीन में प्रति बीघा 108 पौधों के हिसाब से अरडु के कुल 1080 पौधे लगा कृषिवानिकी की तरफ अपना पहला कदम बढाया। जिस क्षेत्र मे अरडु के पौधे लगे हैं उसमें प्रत्येक वर्ष खरीफ एवं रबी की फसलें भी उगाते है। उसके अनुसार अन्य खेतो की तुलना में पैदावार में मात्र 5–10 प्रतिशत की गिरावट आती है तथा अरडु के पौधों की पत्तियों को पशुओं को हरे चारे के रूप में खिलाते है।

मुरारीलाल गुर्जर ने सोचा कि कृषि वानिकी से तो एक निश्चित समय पश्चात् ही आमदनी शुरू हो पायेगी। इस बीच उन्होंने डेयरी शुरू करने की योजना बनाई। योजना को मूर्तरूप देने के लिये उन्होने 2 गिर नस्ल की गायों से शुरुआत की। उन्नत प्रजनन व आहार प्रबंधन द्वारा इनकी इकाई में आज बढकर 40 गायें हैं। जिसमें 37 गिर, 1 जर्सी, 1 हॉलस्ट्रीयन फ्रीजियन एवं 1 थार पारकर नस्ल की गायें हैं जिनमे से 25 गाय नियमित दूध उत्पादन देती है जिनसे लगभग 250 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त होता है और प्रतिमाह 40–45 किलोग्राम घी प्राप्त हो जाता है।

अपनी चारा उत्पादन की जलकृषि इकाई
दिखाते हुए श्री मुरारीलाल

श्री मुरारी लाल का ई-रिक्सा जिसे वह अपने
फार्म पर विभिन्न कार्यों में उपयोग लेते है

इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में एक केंचुआ खाद इकाई (वर्मी कम्पोस्ट यूनिट) तैयार कर ली जो कि लगभग 40 गायों के गोबर से संचालित हो रही है। इस यूनिट से 125–130 क्विंटल खाद प्रतिवर्ष प्राप्त हो जाती है।

श्री मुरारीलाल ने अपने फार्म पर जलकृषि इकाई (हाईड्रोपोनिक्स यूनिट) भी लगाई है जो कि इनके लिये एक नया प्रयोग है। इस इकाई के माध्यम से इनके पशुओं के लिये हरा चारा आसानी से उपलब्ध हो जाता है। इसमें हरे चारे को प्लास्टिक ट्रे में उगाया जाता है।

परिणाम व प्रभाव

श्री मुरारीलाल को अरडु के कुल 1080 पौधे से आने वाले सालों में अनुमानित कीमत 3000/– रुपये प्रति पौधा के हिसाब से 32,40,000/–रुपये की आय होगी। श्री मुरारी लाल ने 5 बीघा भूमि पर शीशम, सागवान यूकेलिप्टस एव बांस आदि के वृक्ष लगा रखे है जो कि आगे चलकर अच्छी आमदनी का स्त्रोत साबित होगे। मुरारीलाल गुर्जर का आत्मविश्वास एवं जज्बा वानिकी के प्रति इतना है कि उन्होंने अपने रिश्तेदारों को भी कृषि वानिकी के लिये प्रेरित किया उनके द्वारा प्रेरित उनके रिश्तेदार एवं मित्रों ने भी अब तक कुल 100 बीघा भूमि पर अरडु, शीशम एवं सागवान के वृक्ष लगवा लिये हैं। इन वृक्षों की किसी भी प्रकार की देखभाल करने की विशेष जरूरत नही पड़ती है।

श्री मुरारीलाल अपनी डेयरी इकाई से प्राप्त आधे दूध को बाजार में बेचकर शेष दूध का घर पर ही घी बनाकर बेचते है। लगभग 5 किलोग्राम घी अपनी पारिवारिक जरूरतों को ध्यान में रखकर घर के काम में लेते है व बाकी बेच देते है। गाय के घी को 1000/– रुपये प्रति किलोग्राम की दर से विक्रय करते है। उनका

कहना है कि इन गायों से प्राप्त दूध व घी पूर्णतः जैविक है, जिसके कारण घर पर ही आसानी से खरीददार उपलब्ध हो जाते हैं।

श्री मुरारीलाल अपनी वर्मी कम्पोस्ट यूनिट से प्राप्त खाद को 6 रुपये प्रति किलोग्राम के हिसाब से विक्रय कर देते है। इससे प्रति माह 75000/– रूपये के अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है। शेष को अपने बगीचे एवं फसल और सब्जियों में काम में ले लेते है। वह खेती में किसी प्रकार का रासायनिक खाद एवं दवाईयों का प्रयोग नही करते है। गौमूत्र से कीटनाशक दवाईयां भी खुद तैयार करते है। इन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर गाय के गोबर से अगरबत्तियां भी बनाना शुरू कर दिया है जो कि एक नया काम है।

इनकी हाईड्रोपोनिक्स यूनिट देखने के लिये आस–पास के कृषक भी आते हैं। यह कम खर्चे में अधिक मुनाफा वाला व्यवसाय है। इसके यहाँ यह इकाई प्रारम्भिक अवस्था में है। भविष्य में इसका विस्तार करने की योजना है। जो कि वृद्धिरत एवं दुधारू पशुओं के लिये अति महत्वपूर्ण चारा है।

तालिका : समन्वित कृषि प्रणाली के विभिन्न घटकों से औसत वार्षिक आय (वर्ष 2017-18)

समन्वित कृषि प्रणाली घटक	औसत वार्षिक आय (लाख रुपये में)
फसल उत्पादन	3.00
पशुपालन	5.50
वर्मी कम्पोस्ट	0.75
कृषि वानिकी	0.50
हाईड्रोपोनिक्स	0.70
योग	**10.45**

संदेश

श्री मुरारीलाल गुर्जर की आर्थिक स्थिति सामान्य थी लेकिन वर्तमान में उन्नत तकनीकियों को अपनाकर उन्होने अपने बेटे को इंजीनियरिंग करने के बाद नौकरी न कराकर आधुनिक तरीके से खेती करने के लिये प्रेरित किया जिसके कारण आज उन्होंने परिवार की जरूरत के हिसाब से भौतिक सुख–सुविधाओं के समस्त उपकरण खरीद लिये है। इसके अलावा इन्होंने एक ई–रिक्शा एजेंसी तथा कृषि से संबंधित सभी प्रकार की आधुनिक मशीने खरीद ली हैं। वर्तमान में वह अपने क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित एवं सामाजिक रूप से अग्रणी किसानों की श्रेणी में आते हैं एवं आधुनिक तकनीक के माध्यम से अन्य किसानों को भी लाभान्वित कर रहे हैं। समय–समय पर कृषि विज्ञान केन्द्र करौली पर होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में बढ–चढकर हिस्सा लेते हैं तथा व्याख्यान भी देते है।

23 कृषि विज्ञान केन्द्र - रेवाड़ी

समन्वित कृषि प्रणाली अपनाकर बढाई आय

परिचय

श्री विजय सिंह पुत्र श्री रामजी लाल, गांव–लाधुवास, पोस्ट–सहारनवास, जिला, रेवाड़ी के एक मिडल कक्षा पास 65 वर्षीय प्रगतिशील किसान है। इनके पास केवल 2.5 एकड़ खेती करने योग्य जमीन है। श्री विजय सिंह पुश्तैनी खेती करते आ रहे है और साथ में पशुपालन व्यवसाय भी करते है। परंपरागत खेती में वे खरीफ में बाजरा व ग्वार की फसल लेते है और रबी में गेंहूँ व सरसों की फसल लेते है। लेकिन समय की मांग के अनुसार परंपरागत कृषि से इनको आय बहुत कम प्राप्त होती थी।

योजना, कार्यान्वन और सहायता

श्री विजय सिंह सन् 1995 से अखबार के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र, रेवाड़ी–रामपूरा में आए एवं वैज्ञानिकों से सलाह मशविरा की तथा समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने के लिए प्रेरित किया और समय–समय पर इन्होनें प्रशिक्षण भी प्राप्त किया, साथ में 6 महीने चलने वाली माली प्रशिक्षण प्राप्त करके भी विजय सिंह ने नर्सरी लगाना, बाग लगाना, सब्जी प्रबन्धन करना, कलम लगाना व फूलों की खेती करना जैसी आदि विधायें सीखी जिससे श्री विजय सिंह काफी प्रभावित हुए एवं समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती करने का मन बनाया।

साथ ही रेवाड़ी व आसपास के क्षेत्रों में समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती करने वालों के यहाँ भ्रमण करवा कर इन्हें प्रेरित किया। इस तरह अब श्री विजय सिंह सन् 2003 से पूर्णतया समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती में जुट गये।

केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण प्राप्त करके श्री विजय सिंह ने बेर व अमरूद का बाग लगाने का निर्णय लिया तथा वैज्ञानिकों के तकनीकी परामर्श से उच्च गुणवत्ता वाले पौधे खरीदकर बाग लगाया और आधे एकड़ में फूलों की खेती शुरू कर दी। परिवार के सदस्यों की सहायता की वजह से श्री विजय सिंह को काफी फायदा मिला व हौंसला मिला। इन्होंने बाग में खाली पड़ी ज़मीन में घिया, टमाटर व बंगाली सब्जी "पोई" लगाई क्योंकि इनके खेत के आस–पास के क्षेत्रों में ईंटों के बहुत भट्टे है जहाँ पर बंगाली मजदूर काम करते है। पोई की सब्जी का बीज भी श्री विजय सिंह ने इनसे ही मंगवाया। बचे हुए एक एकड़ मे भी श्री विजय सिंह उन्नत किस्मों का चयन करके बाजरा, ग्वार, सरसों व गेहूँ फसल चक्र के हिसाब से लेते हैं और रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से बचने एवं गोबर की खाद एवं जैविक खाद के प्रयोग पर ज्यादा जोर देने की ठानी। गांव में

फलोद्यान के साथ सब्जी उत्पादन

इनके घर पर 6 भैंस और 3 बछड़े व बछड़ियां हैं तथा इनकी देख–रेख के लिए परिवार के दो सदस्यों को इनकी जिम्मेदारी दी जिसमें संतुलित मात्रा में इनकी आहार व्यवस्था, घर पर खनिज मिश्रण युक्त बांटा बनाना, हरा चारा, टीकाकरण, एवं अन्य कार्य इनके परिवार के सदस्य करते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र में अन्य किसान तथा अन्य विभागों व सरकारी संस्थानों से आये अधिकारियों को इनके यहाँ ले जाकर एक सफलता का मॉडल दिखाकर बताते है ताकि अन्य किसान भी इनसे प्रेरणा लेकर इस प्रकार की खेती कर सके। श्री विजय सिंह ने सन् 2009–10 में वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन का कौशल प्रशिक्षण प्राप्त किया और सन् 2011 की शुरूआत में इन्होनें स्वंय ही अपने खेत के एक मंत्र में आठ बेड की ईकाई स्थापित की और ईंटों की चारदीवारी व छत बनाई और घर पर पशुओं द्वारा मिलने वाले गोबर का प्रयोग वर्मीकम्पोस्ट बनाने व खेत में प्रयोग करने लगे।

उत्पादन

श्री विजय सिंह ने समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती अपनाकर साल दर साल अधिक आमदनी प्राप्त करने लगे और इनके परिवार में सुख–समृद्धि आई। वर्तमान समय में इनके पास निम्न इकाईयां है इनके खेत पर–

- फल उत्पादन (बेर, अमरूद, करौंदा व नींबू)
- फूल उत्पादन (गैंदा, गुलाब)
- सब्जी उत्पादन (घिया, टमाटर,"पोई")
- डेयरी ईकाई (6 दूधारू भैंस)

- फसल उत्पादन (बाजरा, सरसों व गेहूँ)
- वर्मी कम्पोस्ट (8 बेड)

सन् 2017–18 में भी श्री विजय सिंह की खेती का आर्थिक विश्लेषण देखकर पता चलता है कि एक एकड़ के बाग से ये 1,65,000/– रुपये का शुद्ध लाभ कमा रहे हैं। अंतरसस्य द्वारा सब्जियों से 1,46,000/– रुपये का शुद्ध आय प्राप्त कर रहे है। श्री विजय सिंह घिया के साथ घिया के पत्तों को भी 40 रू किलो की दर से मजदूरों को बेचते है व बंगाली सब्जी "पोई " भी 40 रुपये किलो के हिसाब से बेचते है। रोचक बात यह है कि भट्टे के मजदूर स्वय इनके खेत पर जाकर ये सब्जियाँ खरीद लेते है। फूलों की खेती में आधे एकड से 1,15,000/– रुपये मुनाफा कमा रहे है। श्री विजय सिंह मांग व भाव के हिसाब से मंडी तय करते हैं और जहाँ भाव मिलता है वहाँ जाकर फूल बेचकर आते हैं। रेवाड़ी के साथ–साथ पटौदी, गुड़गाव, दिल्ली आदि मंडियों तक फूल बेचकर अच्छा मुनाफा कमा लेते है। वर्मी कम्पोस्ट इकाई द्वारा पहले स्वयं अपने खेत में प्रयोग करने के बाद भी विजय सिंह एक वर्ष में 63,000 रुपये की शुद्ध आय प्राप्त करते है। पशुपालन द्वारा 2,50,000/– रुपये की आमदनी प्राप्त करते है तथा एकड़ में गेहूँ व सरसों की खेती करके एवं परिवार की जरूरत को पूरा करने के बाद 35,000/– रुपये तक आय प्राप्त करते है। इनकी विशेष बात यह है कि ये कम से कम रासायनिक उर्वरक प्रयोग करते है तो गांव में भी इनका गेहूँ अच्छे भाव में बिक जाता है।

परिणाम व प्रभाव

समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती अपनाने से आसपास के क्षेत्रों में प्रसिद्ध हो गये। इनकी उपलब्धियों और कृषि के क्षेत्र में नवाचार के कारण वर्ष 2011 में सर्वप्रथम खण्ड स्तर आयोजित किसान मेले में उन्नत

फलोद्यान के साथ सब्जी उत्पादन

किसान का पुरुस्कार एवं 10000/– रुपये का ईनाम दिया गया। इसके बाद विजय सिंह ने वर्ष 2013 में जिला स्तरीय किसान सम्मेलन में कृषि मन्त्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए 25000/– रुपये एवं उन्नतशील किसान का ईनाम भी प्राप्त किया। इस प्रकार विजय सिंह ने जिला स्तरीय किसान सम्मेलन में सर्वोच्च किसान का 26 जनवरी 2014 में पुरूस्कार जीता और रेवाड़ी जिले के अन्य किसानों के लिये प्रेरणा स्रोत बने। वर्ष 2014 में ही 19 जनवरी को झज्जर में आयोजित राज्य–स्तरीय किसान सामारोह में कृषि व सम्बद्ध क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उन्नत किसान के पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। श्री विजय सिंह को रोहतक में आयोजित किसान मेले में 14 जनवरी 2014 को ही पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा द्वारा सर्वोच्च किसान का पुरूस्कार व 50,000 का चैक ईनाम स्वरूप दिया गया।

श्री विजय सिंह का कृषि एवं समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा खेती शुरू करने का जुनून होने से वह आज 6,00,000/– रुपये से अधिक सालाना आय प्राप्त कर रहे हैं जिससे उनके परिवार वालों व गांव के किसानों की सोच को भी बदलने पर मजबूर किया है।

संदेश

श्री विजय सिंह का मानना हैं कि कृषि आजिविका का साधन है, यदि सही सलाह और परामर्श कृषि वैज्ञानिकों से लिया जाए तो एक अच्छे व्यवसाय के तौर पर अधिक आय प्राप्त की जा सकती हैं। कृषि के प्रति सकारात्मक सोच, मजबूत ईच्छा शक्ति एवं कृषि की नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक व नवाचार के प्रयोग से वर्तमान परिपेक्ष में कृषि जो घाटे का सौदा साबित हो रही है उसको सफल व्यवसाय में तब्दील करके अधिक लाभ की स्थिती में परिवर्तित कर सकते है।

फलोद्यान के साथ फूल उत्पादन

24 कृषि विज्ञान केन्द्र - रेवाड़ी (रामपुरा)

समन्वित खेती के साथ वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन बना अतिरिक्त आय का साधन

परिचय

श्री बनवारी लाल पुत्र श्री नाथू राम, गांव व डाकघर–नांगल पठानी, खण्ड–जाटूसाना, जिला रेवाड़ी (हरियाणा) के मध्यमवर्गीय प्रगतिशील किसान है। ये आठवीं तक पढ़े है और इनके पास 1.5 एकड़ खेती करने योग्य भूमि है। सीमित भूमि और परिवार की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत ठीक न होने की वजह से 8वीं कक्षा के बाद आगे पढ़ नहीं पाये और परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए खेती के साथ इससे सम्बद्ध व्यवसाय अपनाने की सोची। श्री बनवारी लाल ने परिवार व रिशतेदारों से आर्थिक सहायता लेकर पाँच दुधारू गाय व भैंस खरीदी और वे पशुपालन व्यवसाय से भी जुड़ गये। जिसकी वजह से आय का अतिरिक्त सृजन होने लगा। लेकिन बनवारी लाल कुछ नया करने की चाह रहे थे इसलिए वे तकनीकी में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए सरकारी संस्थानों की तलाश करने लगे ताकि प्रशिक्षण प्राप्त करके एक नया व्यवसाय शुरू कर सकें।

योजना, कार्यान्वन और सहायता

श्री बनवारी लाल समाचार पत्रों के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपूरा में सन् 2002–03 से संपर्क में आये और खेती व पशुपालन के साथ केन्द्र द्वारा संचालित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में सलाह ली। फिर इन्होंने मधुमक्खी पालन, बकरी पालन, मूल्य संवर्धन, मशरूम उत्पादन, वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन आदि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में से वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन में कौशल विकास प्रशिक्षण प्राप्त करने का निर्णय लिया और सन् 2002–2003 में ही इन्होनें यह प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके साथ–साथ इन्होनें समय–समय पर जैविक खेती और पशुपालन आदि पर भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपूरा से तकनीकी परामर्श व सामयिक जानकारी प्राप्त करने के बाद उन्होंने फसलों की उन्नत किस्मों से खेती प्रांरम्भ की तथा पशुओं को संतुलित खिलाई–पिलाई, खनिज मिश्रण युक्त घर पर बांटा तैयार करना, नियमित टीकाकरण करवाना, समय–समय पर पेट के कीड़े मारने की दवाई देना व वर्ष भर हरे चारे का प्रयोग करना आदि शुरू किया। बनवारी लाल के घर में खाली जगह प्रर्याप्त होने से पशुओं के लिए आवास बनवा लिया जिससे उनकी देखरेख व अन्य कार्यों में आसानी होने लगी और बाकी रिक्त पड़ी हुई जगह का उपयोग करने के लिए वर्मीकम्पोस्ट यूनिट की स्थापना करने की ठानी। सन् 2003–04 में शुरूआत में इन्होनें 15 वर्मी बेड के साथ कार्य प्रारम्भ

श्री बनवारी लाल अपनी वर्मी कम्पोस्ट युनिट दिखाते हुए

किया और केन्द्र के वैज्ञानिकों की सलाह लेकर केंचुए खरीदे। घर में पशुपालन व्यवसाय की वजह से इन्हें गोबर के लिए ज्यादा भागदौड़ नहीं करनी पड़ी और 15 बेड से इन्होनें वर्मीकम्पोस्ट बनाना शुरू किया। इन्होंने वर्मीकम्पोस्ट का प्रयोग प्रारंभ में अपने खेत पर शुरू कर दिया और रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बहुत कम कर दिया। शुरूआत के 2–3 वर्षों में इनको अपनी फसलों से ठीक–ठाक उत्पादन मिला। निंरतर वर्मीकम्पोस्ट के प्रयोग से बनवारी लाल ने अपने खेत की उपजाऊ क्षमता बढ़ा दी। आज बनवारी लाल 1.5 एकड़ जमीन से जैविक खेती के माध्यम से बाजरा, सरसों व गेहूँ का उत्पादन कर रहे है और जैविक उत्पादन होने के कारण इनको आमदनी में भी काफी अधिक मिलने लगी और रेवाड़ी क्षेत्र में जैविक खेती का पर्याय बन गये है। दो वर्षों बाद बनवारी लाल वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन का विस्तार करने की सोचने लगे और इन्होनें पक्के शेड बनवाकर बेडों की संख्या 15 से 35 कर दी। इन्होंने वर्मीकम्पोस्ट बनाने व पैक करने की मशीन भी खरीद ली जिससे समय और श्रम की बचत हुई और अपना एक ब्रांड भी बनाया। ये "श्री गणेश" वर्मीकम्पोस्ट के नाम से बैग में खाद की पैंकिग करके बेचते है। वर्तमान समय में ये 50 बेड से वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन कर रहे है। इन्होनें सन् 2014 में बेड्स में पानी देने का नया तरीका भी ईजाद किया। स्प्रिंकलर की नोज़ल द्वारा पानी देने के लिए पाइपलाइन बनाई और सभी वर्मी बेड्स में एक समान पानी देने लगे। जिससे इनको पानी, समय और श्रम में लगभग 40, 40, 30 की बचत हुई। वर्मी बेड्स में पानी देने का यह नवाचार इनको काफी फायदेमंद साबित हुआ।

श्री बनवारी लाल अपनी वर्मी कम्पोस्ट पैकिंग मशीन दिखाते हुए

श्री बनवारी लाल अपने पैक किये हुए 'गणेश ब्राण्ड' वर्मी कम्पोस्ट बैग्स के साथ

उत्पादन

श्री बनवारी लाल वर्तमान समय में (सन् 2017–18) 50 वर्मी बेड्स की इकाई से वर्ष में 4 बार खाद का उत्पादन कर रहे है और वर्ष भर ये 1100 बैग (50 किलो प्रति बैग) वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन कर रहे है और "श्री गणेश" वर्मीकम्पोस्ट ब्रांड के नाम से 300 रुपये प्रति बैग की दर से ये बिक्री कर रहे है। रेवाड़ी व आसपास के क्षेत्रों में इनके वर्मीकम्पोस्ट की अलग पहचान है और वर्मी बेड्स में स्प्रिंकलर की नोजल द्वारा पानी देने के नवाचार की वजह से काफी सराहें भी जा रहे है। वर्मीकम्पोस्ट के साथ–साथ पशुपालन व जैविक खेती के माध्यम से भी आमदनी प्राप्त कर रहे है।

परिणाम व प्रभाव

श्री बनवारी लाल ने सन् 2017–18 में वर्मीकम्पोस्ट व्यवसाय से 2,25,000 रुपये की, पशुपालन व्यवसाय से 1,30,000 रुपये और फसलोत्पादन से 1,30,000 रुपये की शुद्ध आय प्राप्त की है। श्री बनवारी लाल ने अथक प्रयासों द्वारा ये मुकाम हासिल किया और अपनी इन उपलब्धियों एवं कृषि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों एवं वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन में स्प्रिंकलर की नोज़ल द्वारा पानी देने का नवाचार की वजह से क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किया हैं। इनका नाम कृषि विभाग, रेवाड़ी द्वारा सर्वोच्च उद्यमशील किसान पुरुस्कार के लिए अनुमोदित किया हैं। आज बनवारी लाल खेती व पशुपालन के साथ–साथ वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन व्यवसाय को अपनाकर परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर रहे है और सालाना 4,85,000 रुपये शुद्ध आय प्राप्त कर रहे है। बनवारी लाल का खेती के साथ–साथ पशुपालन और वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन व्यवसाय चुनकर एक सफल किसान बनना इनकी लगन, दृढ़ इच्छाशक्ति और काम के प्रति सर्मपण दर्शाता हैं। अपना आय में कई गुणा ईजाफा करके ये अन्य किसानों को प्रेरित कर रहे है।

संदेश

खेती के प्रति सकारात्मक सोच, दृढ़ इच्छाशक्ति और कृषि की नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक व नवाचार के उपयोग से खेती व सम्बद्ध व्यवसायों से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है तथा कौशल विकास प्रशिक्षण प्राप्त करके तकनीकों को उपलब्ध संसाधनों व परिस्थितियों में अपनाकर किसान अपनी आय को दोगुनी कर सकते है।

25 कृषि विज्ञान केन्द्र - सीकर (फतेहपुर)

हाई टेक सब्जी एवं डेयरी उत्पादन ने बनाई रामचन्द्र की बात

परिचय

यह सफलता की कहानी प्रगतिशील कृषकमित्र श्री रामचन्द्र जाट पुत्र श्री बानाराम, गांव व पं.स. –धोद, सीकर जिले की है, जिनके पास कुल 4.0 हैक्टेयर जमीन है।

योजना, क्रियान्वयन व सहायता

भरतिया कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर द्वारा वर्ष 2011 में आयोजित आत्मा परियोजना के तहत पाँच दिवसीय कृषक मित्र प्रशिक्षण किया था। तब से वह लगातार केन्द्र की विभिन्न प्रकार की प्रसार–गतिविधियों, प्रशिक्षणों व प्रदर्शनों में भाग ले रहे है। इन प्रशिक्षणों व प्रदर्शनों से प्रभावित होकर श्री रामचन्द्र ने अपने खेत पर केन्द्र के विशेषज्ञो की सलाह से वर्ष 2015 से अन्य फसलों के साथ–साथ सब्जियों व डेयरी उत्पादन में नई व वैज्ञानिक सोच के साथ–साथ स्वयं के नवप्रवर्तन (इनोवेशन) का समावेश कर परम्परागत खेती से इतर आय के अतिरिक्त स्रोत अर्जित किये।

उत्पादन, परिणाम व प्रभाव

रामचन्द्र ने वर्ष 2016–17 की अवधि में 0.50 हेक्टयर जमीन में बोई गई सब्जियों को स्थानीय बाजार में बेचकर लगभग 1,71,700 / – रुपये का शुद्ध आय प्राप्त की।

जायद सब्जी उत्पादन से औसत वार्षिक आय-व्यय का विवरण (रुपयों में) वर्ष 2016-17

सब्जी	क्षेत्र (वर्गमीटर)	पैदावार (किलो)	औसत बाजार भाव (रु. प्रति किलो)	आय (रु.)
टमाटर	1,500	6,000	16 / –	96,000
मिर्च	700	2,200	18 / –	39,600
तोरई	300	500	15 / –	7,500
घीया	500	1,800	12 / –	21,600
ककड़ी	500	1,500	15 / –	22,500
तरबूज	1,500	6,500	08 / –	52,000
योग	0.50 हे.			**2,39,200**

कुल लागतः आदान खर्चा + मजदूरी लागत = 35,500+32,000 = 67,500 / – रुपये

शुद्ध आयः 2,39,200 – 67,500 = 1,71,700 / –रुपये

पशुपालन से प्राप्त कुल वार्षिक आमदनी का विवरणः वर्ष 2016–17

विवरण	पशुधन संख्या	दूध से आय			पशुधन बिक्री से आय	गोबर की खाद से आय	कुल आय	कुल व्यय	शुद्ध आय
		उत्पादन (लीटर)	भाव (प्रतिलीटर)	आय (रु.)					
गायें (संकर नस्ल)	03	9500	30 / –	2,85,000	12,000	9,000	3,06,000	1,02,000	**2,04,000**
भैंस (मुर्रा नस्ल)	02	1920	40 / –	76,800	15,000	5,200	97,000	46,000	**51,000**
			कुल	**3,61,800**	**27,000**	**14,200**	**4,03,000**	**1,48,000**	**2,55,000**

इस तरह श्री रामचन्द्र ने हाई टेक कृषि एवं डेयरी से शुद्धवार्षिक आय 3,80,800 / – (हाई टेक कृषि से रु. 1,71,700+ डेयरी से रु. 2,55,000) रुपये प्राप्त की है। वर्ष 2017–18 में श्री रामचन्द्र ने 4,33,500 / – की शुद्ध आय पशुपालन व सब्जी की खेती से प्राप्त की। उपरोक्त आय खेती के इन घटकों को किसानों के लिये बहुत ही लाभदायक व्यवसाय के रूप में सिद्ध करती है है और खेती से आय बढाने का अनुकरणीय विकल्प बनाती है।

श्री रामचन्द्र के खेत पर हाई टेक सब्जी उत्पादन का दृश्य

उन्नत डेयरी इकाई का दृश्य

श्री रामचन्द्र अपने हाइ टेक सब्जी उत्पादन इकाई से उत्पादित उच्च गुणवत्ता के उत्पाद के साथ

श्री रामचन्द्र के लिए हाई टेक कृषि एवं डेयरी में नवप्रवर्तन (इनोवेशन) का समावेश काफी लाभदायक रहा। श्री रामचन्द्र कहते है कि केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा उक्त नवप्रवर्तनों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही साथ ही केन्द्र की सलाह व तकनीक से सब्जी उत्पादन में मल्चिगं, लो टनल, उन्नत/संकर बीज व जैविक खादों के प्रयोग से उच्च गुणवता उत्पाद तथा उन्नत डेयरी में संकर नस्ल, संतुलित आहार, आवास प्रबंधन व टीकाकरण आदि से मेरी आय दोगुनी स्तर तक पहुंच गयी। आय के साथ ही मुझे जो जिले में विशेष सामाजिक पहचान मिली वो मेरे लिए गर्व की बात है।

संदेश

श्री रामचन्द्र का कहना है कि आज के समय की हाई टेक कृषि एवं डेयरी में नवप्रवर्तन (इनोवेशन) का अपनी खेती में समावेश कर खेती को काफी लाभदायक व्यवसाय बनाया जा सकता है। कृषि वैज्ञानिको की सलाह व नव तकनीक अपनाकर उच्च गुणवता उत्पाद पैदा कर किसान अपनी आय दोगुनी कर सकते है।

26 कृषि विज्ञान केन्द्र - सीकर (फतेहपुर)

समन्वित खेती है आय दोगुनी करने का विकल्प

परिचय

यह सफलता की कहानी प्रगतिशील कृषक श्री रणवीर सिंह पुत्र श्री रूपचन्द जाट निवासी गांव–कसवाली, तहसील–लक्ष्मणगढ़, जिला–सीकर की। जिनके पास कुल 2.50 हैक्टेयर काश्त योग्य जमीन है।

योजना, क्रियान्वयन व सहायता

भरतिया कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर द्वारा वर्ष 2010 में गांव–कसवाली को गोद लिया गया। इस क्षेत्र के कृषकों के लिए पशुपालन कृषि के साथ–साथ एक अतिरिक्त आय का साधन है। केन्द्र द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों व प्रसार गतिविधियों से प्रेरित होकर श्री रणवीर सिंह ने उन्नत कृषि, अनार की खेती, पशुपालन व जैविक खेती में नवप्रवर्तन (इनोवेशन) का समावेश किया तथा समन्वित खेती पद्धति को व्यावसायिक स्तर पर अपनाने की सोचा। वर्ष 2010–11 में अनार की अरक्ता व सिंदूरी किस्म के 200 पौधें उद्यान विभाग के अनुदान से लगाये, जिनसे वर्ष 2014–15 में फलोत्पादन शुरू हो गया। इनकी इस दृढ़ इच्छा शक्ति तथा कठोर मेहनत के परिणामस्वरूप इनको समन्वित खेती पद्धति से अच्छी आमदनी होने लगी, जिससे इन्होंने जैविक खादों से गुणवतायुक्त फसल उत्पादन, अनार की खेती तथा पशुओं की उन्नत नस्लों के साथ ही उन्नत डेयरी प्रंबधन में सूखे चारे को यूरिया तथा मोलासिस से उपचारित करके तथा पशुओं के आहार में अजोला मिलाकर खिलाते है।

श्री रणवीर सिंह द्वारा प्लास्टिक मल्च का प्रयोग कर 'रेजड बेड' पर बूद-बूद सिंचाई अपना कर सब्जी उत्पादन

उत्पादन, परिणाम व प्रभाव

श्री रणवीर सिंह का वर्ष 2016–17 में समन्वित खेती के विभिन्न घटकों से आय–व्यय का ब्यौरा उनके कथनानुसार निम्न प्रकार रहा हैः–

फसलोत्पादन की औसत वार्षिक आय-व्यय का विवरण (रुपयों में) वर्ष 2016-17

फसल	क्षेत्र (है.)	उत्पादन (क्विं.)		आय	व्यय	शुद्ध आय
		दाना	चारा			
खरीफ (बाजरा, ग्वार, मूंग, चंवला)	1.9	26.5	48	1,20,000	40,450	**79,550**
रबी (चना, गैंहू, जौ, जई)	2.0	49	171	1,74,800	63,000	1,11,800
योग				**2,94,800**	**1,02,450**	**1,91,350**

पशुपालन से प्राप्त कुल वार्षिक आमदनी का विवरण (रुपयों में) वर्ष 2016-17

विवरण	पशुधन संख्या	दुध उत्पादन से आय			पशु बिक्री से आय	कुल आय	व्यय	शुद्ध आय
		उत्पादन (ली.)	भाव (प्रति.ली.)	आय				
गायें (संकर)	04	14,800	30	4,44,000	20,000	4,64,000	1,20,800	**3,43,200**
भैंस (मुर्रा)	01	840	40	33,600	7,000	40,600	22,350	**18,250**
योग				**4,77,600**	**27,000**	**5,04,600**	**1,43,150**	**3,61,450**

अनार उत्पादन की औसत आय-व्यय (रुपयों में) का विवरण वर्ष 2016-17

विवरण	क्षेत्र (है.)	उत्पादन (किलो)	कुल आय	कुल व्यय	शुद्ध आय
अनार बगीचा	0.5	1,200	60,000	20,000	**40,000**

रणवीर सिंह ने वर्ष 2016–17 की अवधि में 0.35 हेक्टयर जमीन में बोई गई सब्जियों को स्थानीय बाजार में बेचकर लगभग 1,09,500/—रूपये का आय प्राप्त की।

सब्जी उत्पादन से औसत वार्षिक आय-व्यय का विवरण (रूपयों में) वर्ष 2016-17

फसल मौसम	सब्जी	क्षेत्र (है.)	पैदावार (किग्रा)	औसत बिक्री भाव (रु/किग्रा)	प्राप्त आय
जायद	भिण्डी	0.10	1,500	25	37,500
	मिर्च	0.10	1,800	20	36,000
	टमाटर	0.08	2,000	12	24,000
	टिण्डा	0.05	1,200	10	12,000
योग		**0.35**			**1,09,500**

कुल लागत (आदान खर्चा+मजदूरी लागत): 15,800+25,400=41,200 रुपये

शुद्ध आय: 1,09,500–41,200= 68,300/–रुपये

इस तरह श्री रणवीर सिंह खेती के विभिन्न घटकों का उन्नत तकनीकी के साथ बेहतर समन्वय कर अपने क्षेत्र की परिस्थिति के अनुसार 'समन्वित कृषि' का एक संतुलित मॉडल अपनाते हुए अपने 2.5 हेक्टेयर की एक छोटी मध्यत जोत से भी वार्षिक तौर 6,61,100/– से 7,50,000 रुपये प्रतिवर्ष की आमदनी प्राप्त करके परिवार के साथ खुशहाल जीवन यापन कर रहे है।

संदेश

इस प्रकार श्री रणवीर सिंह को वर्तमान में समन्वित खेती के सभी स्रोतो से अच्छी आमदनी प्राप्त हो रही है। श्री रणवीर कहते है कि केन्द्र के वैज्ञानिको के तकनीकी मार्गदर्शन से मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ ही मुझे तहसील में विशेष सामाजिक पहचान मिली जो मेरे लिए गर्व की बात है।

श्री रणवीर सिंह की पशुपालन इकाई में उन्नत नस्ल के स्वस्थ पशु (संकर गाय व मुर्रा भैंस)

हरे चारे के विकल्प के रूप में अजोला की उत्पादन इकाई

27 कृषि विज्ञान केन्द्र - गंगानगर

दक्षता से पायी सफलता की राह

परिचय

सुश्री सीमा कुमारी की आयु 23 वर्ष है और बी.ए. (द्वितीय वर्ष) तक पढी–लिखी है। ये शुगर मिल कॉलोनी, 1–ई छोटी, श्रीगंगानगर की रहने वाली है। कुमारी सीमा निम्न आय वर्ग के परिवार की मेहनती लड़की है। आर्थिक रूप से पारिवारिक स्थिति ज्यादा सुदृढ़ न होने के कारण सीमा अपनी पढ़ाई जारी नहीं कर पा रही थी। इसके मद्देनजर सीमा अपनी पढ़ाई आगे बढ़ाने के लिये संघर्षरत थी। सीमा की आगे बढ़ने की इच्छा ने उसे रोजगार के अवसर तलाशने पर मजबूर कर दिया।

योजना, कार्यान्वयन और सहायता

सुश्री सीमा कृषि विज्ञान केन्द्र, श्रीगंगानगर द्वारा आयोजित एक संस्थागत महिला प्रशिक्षण शिविर के दौरान केन्द्र के सम्पर्क में आयी और उसे केन्द्र द्वारा संचालित रोजगारोन्मुखी व्यवसायिक प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी मिली। उसके दृढ़ इरादों को भांपते हुए गृह विज्ञान विशेषज्ञ ने उसे इन प्रशिक्षणों में भाग लेकर स्वावलम्बन की राह पर बढने हेतु प्रेरित किया। जिसके फलस्वरूप उसने केन्द्र द्वारा आयोजित 80 दिवसीय सिलाई प्रशिक्षण ''महिला टेलर'' (दिनांक 7 मार्च 2015 से 30 मई 2015) में भाग लिया और अपनी दक्षता व उत्तम प्रदर्शन के बल पर सर्वोत्तम प्रशिक्षणार्थी का पुरस्कार भी प्राप्त किया। प्रशिक्षण में उसने महिला व बच्चों के सभी तरह के कपड़ों की सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उत्पादन, परिणाम व प्रभाव

प्रशिक्षण लेने के उपरान्त सीमा ने प्रशिक्षण में मिली सिलाई मशिन से ही अपना सिलाई केन्द्र खोला और अपने आस–पास की

महिलाओं के कपड़ों की सिलाई शुरू कर दी। धीरे–धीरे उसकी मेहनत व दक्षता रंग लाने लगी और उसकी आमदनी भी बढ़ने लगी। वर्तमान में सीमा डीजाइनर सूटों की सिलाई कर लगभग रूपये 6000/– प्रतिमाह तक आय अर्जित कर लेती है।

संदेश

सीमा ने अन्य लड़कियों के लिये सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र भी खोल रखा है। इस तरह सीमा ने अपने हुनर व दक्षता के दम पर स्वरोजगार में सफल होकर नयी मिसाल कायम की है। उसके अनुसार साथ ही घर में रहकर खेती व पशुपालन से सम्बंधित कार्यों को सफलतापूर्वक किया जा सकता है। सामयिक कृषि निवेश पर व्यय करने की क्षमता बढ जाती है जिससे प्रति इकाई क्षेत्रफल में उत्पादकता का बढाया जा सकता है।

28 कृषि विज्ञान केन्द्र - गंगानगर

मधुमक्खी पालन ने दिलवाई नई पहचान

परिचय

श्री सतपाल सिंह, गाँव– 47 एफ, तहसील– करणपुर, जिला–श्रीगंगानगर (राज.) के निवासी है। ये 9वीं कक्षा तक पढे–लिखें है, इनकी उम्र–40 वर्ष है। इनके पास खेती की 1.5 हैक्टेयर जमीन है। ये अपने गाँव के प्रगतिशील किसान है जो कि पहले अन्य किसानो की तरह परिवार के साथ मिलकर खेती करते थे।

योजना, कार्यान्वयन और सहायता

श्री सतपाल सिंह बढती पारिवारिक जिम्मेदारी और छोटी जोत के कारण परिवार की जरूरतें पूरी नहीं हो रही थी ऐसे समय में सतपाल सिंह ने कोई अन्य कार्य करने की ठानी और वे कृषि विज्ञान केन्द्र के संपर्क में आये व मधुमक्खी पालन के बारे में जानकारी ली और इसको एक सम्पूर्ण रोजगार के रूप में अपनाया।

उत्पादन

श्री सतपाल सिंह ने सर्वप्रथम 10 मधुमक्खी के पेटी (बॉक्स) से शुरुआत की तथा धीरे–धीरे अगले 5 वर्ष मे 300 मधुमक्खी की पेटियां स्थापित की तथा हर वर्ष काफी पेटियां दूसरे किसानों को भी देते है। श्री सतपाल सिंह के अनुसार वह अपनी मधुमक्खियों को अक्टूबर से फरवरी तक अपने सरसों के खेतों में, मार्च से अप्रैल तक शीशम पर तथा अप्रैल से मई तक पंजाब मे लीची–बरसीम में रखते है। जिससे की उन्हें कई किस्मों का शहद प्राप्त होता है जिसका स्वाद एवं गुणवता अलग–अलग होती है।

परिणाम व प्रभाव

श्री सतपाल सिंह ने कृषि के साथ–साथ अन्य कृषि आधारित सह–व्यवसाय अपनाने के लिए रूचि दिखाई तथा वर्ष 2007 मे कृषि विज्ञान केंद्र श्रीगंगानगर के मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम मे सरूचि भाग

लिया तथा मधुमक्खी पालन करने की जिज्ञासा दिखाई तथा कृषि विज्ञान केंद्र की सलाह से मधुमक्खी पालन का व्यवसाय प्रारंभ किया। आज श्री सतपाल सिंह ने शारीरिक अक्षमताओं को पीछे छोड़ते हुए 300 पेटियों से प्राप्त शहद को उचित मात्रा की पैकिंग कर सालाना 3.5 से 4 लाख रूपये कमा लेते है।

संदेश

श्री सतपाल सिंह एक प्रगतिशील किसान के रूप मे जाने जाते है तथा अन्य किसानों से सम्पर्क कर मधुमक्खी पालन को एक सफल व्यवसाय के रूप मे अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते है। अब तक उन्होंने 10 किसानो को मधुमक्खी पालन से जोड़ा है। साथ ही वह कहते है कि पर–परागित फसलों जैसे – सरसों, ज्वार, बाजरा व सब्जियों की उत्पादकता मधुमक्खी पालन द्वारा बढायी जा सकती है।